CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2009 with Solution PDF-Set 2/1/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(ञ). 'उच्चारण' और 'भारतीय' शब्दों के उपसर्ग-प्रत्यय बताइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले जुड़ता है; प्रत्यय मूल शब्द के बाद जुड़कर नया शब्द बनाता है।
- संधि के कारण उपसर्ग का अंतिम व्यंजन बदल सकता है; इसलिए उसकी पहचान मूल रूप से की जाती है।

चरण 1: उच्चारण में उपसर्ग पहचानना 'उच्चारण' का शब्द-निर्माण 'उत् + चारण' से हुआ है। व्यंजन-संधि में 'त्' का 'च्' हो जाने से 'च्च' बना है। अतः इसमें उपसर्ग 'उत्' है; केवल लिखे हुए 'उच्' को मूल उपसर्ग नहीं मानना चाहिए।

चरण 2: भारतीय में प्रत्यय पहचानना 'भारतीय' का निर्माण 'भारत + ईय' से हुआ है। यहाँ मूल शब्द 'भारत' है और उसके बाद जुड़ा 'ईय' प्रत्यय उससे संबंध रखने का अर्थ देता है। इस प्रकार भारतीय का अर्थ भारत से संबंधित है।

चरण 3: निष्कर्ष 'उच्चारण' में उपसर्ग 'उत्' और 'भारतीय' में प्रत्यय 'ईय' है।

त्वरित सुझाव: उपसर्ग बताते समय संधि खोलकर उसका मूल रूप लिखें; प्रत्यय के लिए मूल शब्द और अंत में जुड़े अंश को अलग करें।

1(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: सिने जगत के अनेक नायक-नायिकाओं, गीतकारों, कहानीकारों और निर्देशकों को हिंदी के माध्यम से पहचान मिली है। यही कारण है कि गैर-हिंदी भाषी कलाकार भी हिंदी की ओर आए हैं। समय और समाज के उभरते सच को परदे पर पूरी अर्थवत्ता में धारण करने वाले ये लोग दिखावे के लिए भले ही अंग्रेज़ी के आग्रही हों, लेकिन बुनियादी और ज़मीनी हकीकत यही है कि इनकी पूँजी, इनकी प्रतिष्ठा का एकमात्र निमित्त हिंदी ही है। लाखों-करोड़ों दिलों की धड़कनों पर राज करने वाले ये सितारे हिंदी फ़िल्म और भाषा के सबसे बड़े प्रतिनिधि हैं। 'छोटा परदा' ने आम जनता के घरों में अपना मुक़ाम बनाया तो लगा हिंदी आम भारतीय की जीवन-शैली बन गई। हमारे आद्यग्रंथों – रामायण और महाभारत को जब हिंदी में प्रस्तुत किया गया तो सड़कों का कोलाहल सन्नाटे में बदल गया। 'बुनियाद' और 'हम लोग' से शुरू हुआ सोप ऑपेरा का दौर हो या सास-बहू धारावाहिकों का, ये सभी हिंदी की रचनात्मकता और उर्वरता के प्रमाण हैं। 'कौन बनेगा करोड़पति' से करोड़पति चाहे जो बने हों, पर सदी के महानायक की हिंदी हर दिल की धड़कन और हर धड़कन की भाषा बन गई। सुर और संगीत की प्रतियोगिताओं में कर्णाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, असम, सिक्किम जैसे गैर-हिंदी क्षेत्रों के कलाकारों ने हिंदी गीतों के माध्यम से पहचान बनाई। ज्ञान गंभीर 'डिस्कवरी' चैनल हो या बच्चों को रिझाने-लुभाने वाला 'टॉम ऐंड जेरी' – इनकी हिंदी उच्चारण की मिठास और गुणवत्ता अद्भुत, प्रभावी और ग्राह्य है। धर्म-संस्कृति, कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान–सभी कार्यक्रम हिंदी की संप्रेषणीयता के प्रमाण हैं। उपर्युक्त अवतरण के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक पूरे गद्यांश के मुख्य विषय को संक्षेप में प्रकट करता है।
- यह गद्यांश सिनेमा और टेलीविजन के माध्यम से हिंदी की लोकप्रियता, रचनात्मकता और संप्रेषणीयता बताता है।

चरण 1: मुख्य विषय पहचानना गद्यांश के आरंभ में हिंदी सिनेमा से कलाकारों को मिली पहचान का वर्णन है। इसके बाद धारावाहिकों, प्रतियोगिताओं और ज्ञान-विज्ञान के कार्यक्रमों में हिंदी की व्यापक पहुँच बताई गई है। इसलिए विषय केवल किसी अभिनेता या किसी एक कार्यक्रम तक सीमित नहीं है।

चरण 2: पूरे कथ्य को समेटना ऐसा शीर्षक उचित है जिसमें हिंदी और उसके प्रचार के दोनों प्रमुख माध्यम आ जाएँ। सिनेमा तथा छोटे परदे के उदाहरण मिलकर हिंदी की लोकप्रियता और प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। शीर्षक में इन दोनों को रखने से गद्यांश का पूरा आशय समाहित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक: सिनेमा और टेलीविजन में हिंदी का बढ़ता प्रभाव।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में गद्यांश का साझा केंद्रीय विषय रखें; किसी एक उदाहरण या व्यक्ति का नाम पूरे गद्यांश का शीर्षक न बनाएँ।

1(ख). गैर-हिंदी भाषी कलाकारों के हिंदी सिनेमा में आने के दो कारणों का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण बताने वाले प्रश्न का उत्तर गद्यांश की स्पष्ट सूचनाओं पर आधारित होना चाहिए।
- गद्यांश हिंदी को कलाकारों की पहचान, पूँजी और प्रतिष्ठा का माध्यम बताता है।

चरण 1: पहचान और लोकप्रियता का कारण गद्यांश में कहा गया है कि अनेक नायक-नायिकाओं, गीतकारों, कहानीकारों और निर्देशकों को हिंदी के माध्यम से पहचान मिली। हिंदी फ़िल्मों की पहुँच लाखों-करोड़ों दर्शकों तक है। इसलिए गैर-हिंदी भाषी कलाकार भी हिंदी सिनेमा में आकर व्यापक जनसमुदाय के बीच अपनी पहचान और लोकप्रियता बनाना चाहते हैं।

चरण 2: आर्थिक सफलता और प्रतिष्ठा का कारण लेखक स्पष्ट करता है कि कलाकारों की पूँजी और प्रतिष्ठा का निमित्त हिंदी है। इससे दूसरा कारण सामने आता है: हिंदी सिनेमा उन्हें आर्थिक सफलता और सम्मान दिलाता है। भाषा का व्यापक दर्शक-वर्ग उनके काम को स्वीकार करता है और उन्हें प्रतिष्ठित कलाकार बनने का अवसर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष गैर-हिंदी भाषी कलाकार हिंदी सिनेमा में व्यापक पहचान तथा लोकप्रियता पाने और आर्थिक सफलता तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिए आए हैं।

त्वरित सुझाव: दो कारण माँगे जाने पर पहचान-लोकप्रियता को एक बिंदु और आर्थिक सफलता-प्रतिष्ठा को दूसरा बिंदु बनाकर स्पष्ट लिखें।

1(ग). छोटा परदा से क्या तात्पर्य है? इसका आम जन-जीवन की भाषा पर क्या प्रभाव पड़ा? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग के अनुसार प्रयुक्त शब्द का अर्थ आसपास दिए उदाहरणों से स्पष्ट होता है।
- भाषा पर प्रभाव समझाते समय उसकी पहुँच और जन-जीवन में उसके प्रयोग को जोड़ना चाहिए।

चरण 1: छोटे परदे का तात्पर्य यहाँ छोटे परदे से तात्पर्य टेलीविजन है। गद्यांश में इसके तुरंत बाद रामायण, महाभारत, बुनियाद, हम लोग और अन्य धारावाहिकों का उल्लेख है। ये कार्यक्रम घरों में टेलीविजन पर देखे जाते हैं। इसलिए इस अभिव्यक्ति का आशय घर-घर पहुँचने वाले टेलीविजन माध्यम से है।

चरण 2: आम जन-जीवन की भाषा पर प्रभाव टेलीविजन ने हिंदी को आम जनता के घरों तक पहुँचाया। लोग हिंदी में धारावाहिक, मनोरंजन, ज्ञान-विज्ञान और सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने-सुनने लगे। इससे हिंदी के प्रति अपनापन और उसकी समझ बढ़ी तथा वह रोजमर्रा के जीवन से अधिक निकटता से जुड़ गई। लेखक के अनुसार हिंदी आम भारतीय की जीवन-शैली बन गई।

चरण 3: निष्कर्ष छोटा परदा टेलीविजन है। इसके प्रसार से हिंदी घर-घर पहुँची और आम भारतीय के दैनिक जीवन तथा जीवन-शैली की भाषा बन गई।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले वाक्य में शब्द का सीधा अर्थ और अगले वाक्य में गद्यांश के अनुसार भाषा पर पड़ा प्रभाव लिखें।

1(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – सड़कों का कोलाहल सन्नाटे में बदल गया। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करने में कथन का प्रसंग और उसके पीछे का भाव दोनों बताने चाहिए।
- यह कथन हिंदी में प्रसारित रामायण और महाभारत की अत्यधिक लोकप्रियता से जुड़ा है।

चरण 1: कथन का प्रसंग पहचानना लेखक बताता है कि आद्यग्रंथ रामायण और महाभारत जब हिंदी में टेलीविजन पर प्रस्तुत किए गए, तब उन्हें देखने में लोगों की गहरी रुचि जागी। कथन में सड़कों का कोलाहल सामान्य समय की भीड़भाड़ और शोरगुल का संकेत है। यह प्रसंग कार्यक्रमों के दर्शकों पर पड़े आकर्षण को स्पष्ट करता है।

चरण 2: सन्नाटे का निहित अर्थ समझना प्रसारण के समय बहुत से लोग अपने कामकाज छोड़कर घरों में कार्यक्रम देखने बैठ जाते थे। फलतः सड़कों पर लोगों की आवाजाही और हलचल बहुत कम हो जाती थी। शोरगुल की जगह सन्नाटा छा जाने की अभिव्यक्ति इसी व्यापक दर्शक-रुचि को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रकट करती है। इससे हिंदी कार्यक्रमों की असाधारण लोकप्रियता का बोध होता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि हिंदी में प्रसारित रामायण और महाभारत इतने लोकप्रिय थे कि उनके प्रसारण के समय लोग घरों में उन्हें देखने लगते थे और सड़कों की भीड़भाड़ तथा शोरगुल बहुत कम हो जाता था।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय रामायण-महाभारत का प्रसंग अवश्य जोड़ें; केवल कोलाहल और सन्नाटा के शब्दार्थ देना पर्याप्त नहीं है।

1(ङ). कुछ बहुप्रचलित और लोकप्रिय धारावाहिकों के उल्लेख से लेखक क्या सिद्ध करना चाहता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उदाहरणों का उद्देश्य लेखक के मुख्य कथन को प्रमाणित करना होता है।
- गद्यांश में लोकप्रिय धारावाहिक हिंदी की रचनात्मकता, उर्वरता और जनसंपर्क की क्षमता दिखाते हैं।

चरण 1: उल्लिखित उदाहरणों को पहचानना लेखक रामायण और महाभारत के साथ 'बुनियाद', 'हम लोग' तथा सास-बहू धारावाहिकों का उल्लेख करता है। इनमें धार्मिक-सांस्कृतिक कथाओं से लेकर पारिवारिक और सामाजिक जीवन तक विविध विषय हैं। इन सबका हिंदी में लोकप्रिय होना बताता है कि यह भाषा अलग-अलग प्रकार की विषयवस्तु को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकती है।

चरण 2: उदाहरणों से निकलता निष्कर्ष समझना लेखक इन कार्यक्रमों को हिंदी की रचनात्मकता और उर्वरता के प्रमाण कहता है। इनकी व्यापक लोकप्रियता यह भी दिखाती है कि हिंदी सरलता से आम दर्शकों तक पहुँचती है और उनसे आत्मीय संबंध बनाती है। धारावाहिकों ने हिंदी को जन-जीवन से जोड़कर उसकी संप्रेषण-शक्ति तथा अभिव्यक्ति की समृद्धि सिद्ध की है।

चरण 3: निष्कर्ष लोकप्रिय धारावाहिकों के उल्लेख से लेखक हिंदी की रचनात्मकता, उर्वरता और प्रभावी संप्रेषणीयता सिद्ध करना चाहता है। हिंदी विविध विषयों को व्यक्त करके जनसाधारण से गहरा संबंध बनाती है।

त्वरित सुझाव: लेखक का उद्देश्य पूछे जाने पर कार्यक्रमों की सूची देकर न रुकें; उनसे सिद्ध होने वाली हिंदी की विशेषताएँ भी लिखें।

1(च). 'सदी का महानायक' से लेखक का संकेत किस फ़िल्मी सितारे की ओर है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी संकेत की पहचान उसके साथ दिए कार्यक्रम या प्रसंग से की जाती है।
- गद्यांश में सदी के महानायक का उल्लेख कौन बनेगा करोड़पति और उनकी प्रभावी हिंदी के साथ आया है।

चरण 1: प्रसंग का संकेत पकड़ना गद्यांश में 'कौन बनेगा करोड़पति' का उल्लेख करते हुए सदी के महानायक की हिंदी को हर दिल की धड़कन बताया गया है। यह कार्यक्रम यहाँ व्यक्ति को पहचानने का मुख्य संकेत है।

चरण 2: संकेतित कलाकार पहचानना इस संदर्भ में 'सदी का महानायक' अमिताभ बच्चन के लिए प्रयुक्त हुआ है। लेखक उनके प्रभावी हिंदी भाषण और प्रस्तुति के माध्यम से हिंदी की लोकप्रियता को रेखांकित करता है। प्रश्न में उसी फ़िल्मी सितारे का नाम पूछा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष 'सदी का महानायक' से लेखक का संकेत अमिताभ बच्चन की ओर है।

त्वरित सुझाव: व्यक्ति की पहचान के प्रश्न में दिए कार्यक्रम को संकेत बनाएँ और अंतिम उत्तर में संबंधित व्यक्ति का पूरा नाम लिखें।

1(छ). फ़िल्म और टी.वी. ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में क्या भूमिका निभाई है? संक्षेप में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में हिंदी के विस्तार का आधार फ़िल्मों, धारावाहिकों, गीतों और विविध टेलीविज़न कार्यक्रमों की लोकप्रियता है।
- उत्तर में दोनों माध्यमों की भूमिका तथा सामान्य जनता और गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों तक उनकी पहुँच बतानी है।

चरण 1: फ़िल्मों की भूमिका पहचानिए हिंदी फ़िल्मों ने नायक-नायिकाओं, गीतकारों और निर्देशकों को व्यापक पहचान दी। उनकी लोकप्रियता से हिंदी लाखों-करोड़ों दर्शकों तक पहुँची। गैर-हिंदी भाषी कलाकार भी हिंदी की ओर आए और हिंदी गीतों के माध्यम से विभिन्न प्रदेशों के कलाकारों ने पहचान बनाई। इस प्रकार फ़िल्मों और गीतों ने भाषाई सीमाओं के पार हिंदी का प्रसार किया।

चरण 2: टेलीविज़न का प्रभाव समझिए छोटे परदे ने हिंदी को घर-घर पहुँचाकर सामान्य भारतीय की जीवन-शैली से जोड़ दिया। रामायण, महाभारत और लोकप्रिय धारावाहिकों ने दर्शकों को आकर्षित किया। खेल-प्रश्नोत्तरी, संगीत, बच्चों तथा ज्ञान-विज्ञान के कार्यक्रमों में हिंदी के प्रयोग ने उसकी सहज संप्रेषणीयता प्रमाणित की और उसे जनजीवन की प्रभावी भाषा बनाया।

चरण 3: निष्कर्ष फ़िल्मों और टी.वी. ने मनोरंजन तथा ज्ञान के विविध कार्यक्रमों द्वारा हिंदी को घर-घर और गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों तक पहुँचाया। इन माध्यमों ने हिंदी को लोकप्रिय, प्रभावशाली और सामान्य जीवन से जुड़ी भाषा बनाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर को फ़िल्म और टी.वी. के दो बिंदुओं में बाँटिए; प्रत्येक में गद्यांश से एक उदाहरण और हिंदी के प्रसार पर उसका प्रभाव जोड़िए।

1(ज). 'उर्वरता' शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उर्वरता का अर्थ उपजाऊ होने की क्षमता है; इसका प्रयोग भूमि के लिए और रचनाशीलता के अर्थ में भी होता है।
- वाक्य में शब्द का प्रयोग ऐसा हो कि उसका अर्थ और दूसरे शब्दों के साथ संबंध स्पष्ट हो जाए।

चरण 1: शब्द का अर्थ पहचानिए उर्वर भूमि में फसल उगाने की अच्छी क्षमता होती है। इसी गुण को उर्वरता कहते हैं। इसलिए खेती, मिट्टी और खाद से जुड़ा प्रसंग इस शब्द का अर्थ स्पष्ट कर सकता है।

चरण 2: अर्थानुकूल वाक्य बनाइए वाक्य: जैविक खाद के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। यहाँ उर्वरता का अर्थ मिट्टी की फसल पैदा करने की क्षमता है और खाद उस क्षमता को बढ़ाने वाला साधन है।

चरण 3: निष्कर्ष जैविक खाद के प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: उर्वरता को मिट्टी की उपजाऊ क्षमता से जोड़कर वाक्य बनाइए; केवल शब्द का अर्थ लिखना वाक्य-प्रयोग नहीं है।

1(झ). 'सन्नाटा' और 'विलोम' शब्दों के विलोम लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विलोम शब्दों के अर्थ परस्पर विपरीत होते हैं। उत्तर देते समय दिए गए शब्द का प्रचलित अर्थ ध्यान में रखा जाता है।
- सन्नाटा ध्वनि या चहल-पहल के अभाव को तथा विलोम उलटी दिशा या विपरीत क्रम को व्यक्त करता है।

चरण 1: सन्नाटा का विपरीत अर्थ चुनिए सन्नाटा का अर्थ है निस्तब्धता या आवाज़ का अभाव। इसके विपरीत शोर या कोलाहल में अनेक आवाज़ें सुनाई देती हैं। गद्यांश में भी सड़कों के कोलाहल के सन्नाटे में बदलने का उल्लेख है। अतः सन्नाटा का विलोम कोलाहल है।

चरण 2: विलोम का विपरीत शब्द चुनिए विलोम का अर्थ उलटा या विपरीत क्रम है। अनुलोम का अर्थ सीधा अथवा स्वाभाविक क्रम के अनुकूल है। इसलिए विलोम और अनुलोम परस्पर विपरीत अर्थ वाले शब्द हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सन्नाटा का विलोम कोलाहल और विलोम का विलोम अनुलोम है।

त्वरित सुझाव: पहले शब्द का अर्थ खोलिए: सन्नाटा के सामने शोर और उलटे क्रम के सामने अनुकूल क्रम रखकर विलोम पहचानिए।

2(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उस पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: हो दोस्त या कि वह दुश्मन हो, हो परिचित या परिचय-विहीन तुम जिसे समझते रहे बड़ा या जिसे मानते रहे दीन यदि कभी किसी कारण से उसके यश पर पड़ती दिखे धूल, तो सख्त बात कह उठने को रे, तेरे हाथों हो न भूल। मत कहो कि वह ऐसा ही था, मत कहो कि इसके सौ गवाह, यदि सचमुच ही वह फिसल गया या पकड़ी उसने गलत राह तो सख्त बात से नहीं, स्नेह से काम ज़रा लेकर देखो, अपने अंतर का नेह अरे, देकर देखो। कितने भी गहरे रहें गर्त, हर जगह प्यार जा सकता है, कितना भी भ्रष्ट ज़माना हो, हर समय प्यार भा सकता है, जो गिरे हुओं को उठा सके, इससे प्यारा कुछ जतन नहीं, दे प्यार उठा पाए न जिसे इतना गहरा कुछ पतन नहीं। देखे से प्यार भरी आँखें दुस्साहस पीले होते हैं हर एक धृष्टता के कपोल आँसू से गीले होते हैं। तो सख्त बात से नहीं स्नेह से काम ज़रा लेकर देखो, अपने अंतर का नेह अरे, देकर देखो। गलत राह पर चल रहे व्यक्ति को सही राह पर लाने का क्या उपाय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश गलत मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति के प्रति कठोरता के स्थान पर आत्मीय व्यवहार करने का संदेश देता है।
- उत्तर का आधार कवि का निर्देश है: 'सख्त बात से नहीं, स्नेह से काम ज़रा लेकर देखो।'

चरण 1: कवि का निर्देश पहचानिए कवि ऐसे व्यक्ति को अपमानित करने या उसके पुराने दोष गिनाने से रोकता है जो गलत राह पर चल पड़ा है। 'मत कहो कि वह ऐसा ही था' कहकर वह निंदा से बचने की सीख देता है।

चरण 2: सुधार का उपाय स्पष्ट कीजिए उस व्यक्ति के साथ प्रेम, सहानुभूति और अपनापन बरतना चाहिए। हृदय का स्नेह देकर उसकी भलाई की इच्छा प्रकट करने से उसमें सही रास्ते पर लौटने की प्रेरणा जागती है।

चरण 3: निष्कर्ष गलत राह पर चल रहे व्यक्ति को कठोर वचन और निंदा से बचकर प्रेम, स्नेह तथा आत्मीय व्यवहार द्वारा सही राह पर लाना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उपाय पूछे जाने पर पद्यांश की 'सख्त बात से नहीं, स्नेह से' पंक्ति को आधार बनाकर व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लिखिए।

2(ख). प्यार की शक्ति के बारे में कवि की क्या मान्यता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि प्यार को मनुष्य का नैतिक उत्थान करने वाली प्रभावी शक्ति मानता है।
- गर्त और पतन के बिंब गलत आचरण की गहराई बताते हैं; प्यार की पहुँच उस गहराई से भी आगे मानी गई है।

चरण 1: पद्यांश में विश्वास पहचानिए कवि कहता है कि गर्त कितने ही गहरे हों, प्यार हर जगह पहुँच सकता है। भ्रष्ट समय में भी स्नेह का महत्व समाप्त नहीं होता और मनुष्य उसे स्वीकार कर सकता है।

चरण 2: प्यार की सामर्थ्य समझिए प्यार में गिरे हुए व्यक्ति को उठाने तथा उसके हृदय को बदलने की क्षमता है। कवि की मान्यता है कि ऐसा कोई गहरा पतन नहीं जिससे स्नेह मनुष्य का उद्धार न कर सके।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार प्यार की शक्ति इतनी व्यापक है कि वह अत्यंत पतित व्यक्ति के हृदय को भी बदलकर उसका उत्थान कर सकती है।

त्वरित सुझाव: प्यार की शक्ति बताते समय 'हर जगह प्यार जा सकता है' और 'गिरे हुओं को उठा सके' को जोड़कर सुधार की सामर्थ्य स्पष्ट कीजिए।

2(ग). आशय स्पष्ट कीजिए: हर एक धृष्टता के कपोल आँसू से गीले होते हैं। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ लिखते समय काव्य की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति को प्रसंगानुकूल सरल भाषा में समझाया जाता है।
- धृष्टता उद्दंड व्यवहार है और कपोल गाल हैं। यहाँ धृष्टता के कपोल कहकर धृष्ट व्यक्ति का संकेत किया गया है।

चरण 1: शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ खोलिए कवि पहले प्यार भरी आँखों का प्रभाव बताता है। उसी प्रसंग में धृष्टता के कपोल आँसुओं से गीले होने की बात आती है। धृष्टता कोई अलग शरीरधारी वस्तु नहीं, बल्कि उद्दंड व्यक्ति की प्रवृत्ति है; अतः पंक्ति उस व्यक्ति के गालों पर बहने वाले आँसुओं की ओर संकेत करती है।

चरण 2: भाव-परिवर्तन स्पष्ट कीजिए आत्मीय प्रेम पाकर कठोर और उद्दंड व्यक्ति का हृदय भी पिघल जाता है। उसके भीतर अपनी गलतियों का एहसास तथा पश्चात्ताप जागते हैं। उसका अहंकार और अकड़ कम होते हैं और आँखों से आँसू बहने लगते हैं। ये आँसू मार या दंड से उपजी पीड़ा के नहीं, प्रेम से जागी संवेदना और आत्मग्लानि के प्रतीक हैं। इसीलिए कवि सुधार के लिए स्नेह अपनाने को कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि सच्चे प्रेम और आत्मीयता से उद्दंड व्यक्ति भी संवेदनशील हो उठता है। उसे अपनी गलतियों पर पश्चात्ताप होता है और उसकी आँखों से निकले आँसू उसके गाल भिगो देते हैं।

त्वरित सुझाव: आशय में केवल गाल और आँसू का अर्थ न लिखिए; प्रेम से उद्दंडता के पिघलने और पश्चात्ताप जागने का भाव अवश्य जोड़िए।

2(घ). अंतर का स्नेह बाँटने से व्यक्ति के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अंतर का स्नेह हृदय से दिया गया सच्चा प्रेम और अपनापन है। पद्यांश उसके द्वारा होने वाले मानवीय परिवर्तन को रेखांकित करता है।
- कवि स्नेह बाँटने को गिरे हुए मनुष्य के उत्थान और कठोरता के अंत से जोड़ता है।

चरण 1: स्नेह का तत्काल प्रभाव पहचानिए प्रेमपूर्ण दृष्टि और व्यवहार व्यक्ति की अकड़ तथा धृष्टता को कम करते हैं। उसका हृदय पिघलता है और उसमें दूसरों की भावना समझने की संवेदना जागती है।

चरण 2: जीवन में आने वाला परिवर्तन बताइए आत्मीयता मिलने पर भटके हुए व्यक्ति को अपनी भूल का एहसास होता है और वह सही मार्ग पर लौटने की प्रेरणा पाता है। इस प्रकार स्नेह बाँटना संबंधों में अपनापन बढ़ाता है और जीवन को सुधार की ओर ले जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंतर का स्नेह बाँटने से कठोरता और अहंकार मिटते हैं, पश्चात्ताप तथा संवेदना जागते हैं और भटके व्यक्ति के जीवन में सुधार व मानवीयता आती है।

त्वरित सुझाव: प्रभाव बताते समय क्रम रखिए: स्नेह मिलने से हृदय पिघलना, भूल का एहसास होना और जीवन में सुधार की प्रेरणा जागना।

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: (क) मोबाइल बिना सब सूना (ख) बीस-बीस क्रिकेट का रोमांच (ग) भ्रष्टाचार की समस्या (घ) प्रगति पथ पर भारत [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक समापन होता है। प्रत्येक अनुच्छेद मुख्य विषय के किसी एक पक्ष को स्पष्ट करता है।
- विचारों की मौलिकता, उपयुक्त उदाहरण और संतुलित दृष्टिकोण लेखन को प्रभावशाली बनाते हैं। परीक्षा में किसी एक विषय का चयन करना है; अभ्यास के लिए चारों के नमूने दिए गए हैं।

चरण 1: विषयों की रूपरेखा बनाएँ मोबाइल पर उपयोगिता, अति-निर्भरता और संयम; बीस-बीस क्रिकेट पर गति, रणनीति और खेलभावना; भ्रष्टाचार पर कारण, दुष्परिणाम और उपाय; भारत की प्रगति पर उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और नागरिक दायित्व लिखें। शीर्षक के बाद भूमिका दें, फिर विषय को अनुच्छेदों में विकसित करें। अप्रमाणित आँकड़ों और नारेबाजी से बचें।

चरण 2: विषय (क) का आदर्श निबंध **मोबाइल बिना सब सूना**

कभी दूर बसे प्रियजन का समाचार पाने के लिए पत्र की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। आज मोबाइल ने संवाद को इतना सहज बना दिया है कि उसके बिना दैनिक जीवन अधूरा लगता है। घर, कार्यालय और यात्रा में यह छोटा-सा उपकरण निरंतर साथ रहता है।

मोबाइल की सबसे बड़ी विशेषता है तत्काल संपर्क। किसी दुर्घटना में सहायता बुलाना, यात्रा के दौरान परिवार को सूचना देना और व्यापार संबंधी जानकारी पहुँचाना इससे आसान हो गया है। संदेश, घड़ी, अलार्म और कैमरे जैसी सुविधाएँ भी इसकी उपयोगिता बढ़ाती हैं। दूरियाँ घटने से संबंधों में संवाद बना रहता है और आवश्यक काम समय पर पूरे होते हैं।

किंतु सुविधा का अतिरेक समस्या बन सकता है। बार-बार बजती घंटियाँ पढ़ाई और काम में बाधा डालती हैं। साथ बैठे लोगों को छोड़कर फोन में व्यस्त रहना आत्मीयता कम करता है। वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग दुर्घटना का कारण बन सकता है। अनावश्यक बातचीत पर समय और धन भी नष्ट होता है।

इसलिए मोबाइल को विवेकपूर्ण ढंग से अपनाना चाहिए। अध्ययन, विश्राम और पारिवारिक बातचीत के समय उसका उपयोग सीमित हो। तकनीक हमारी सहायक बने, स्वामिनी नहीं। मोबाइल के बिना जीवन कुछ कठिन अवश्य हो सकता है, पर मानवीय संबंधों और आत्मसंयम के बिना सचमुच सूना हो जाएगा।

चरण 3: विषय (ख) का आदर्श निबंध **बीस-बीस क्रिकेट का रोमांच**

अंतिम ओवर में जीत के लिए कुछ रन चाहिए और दर्शकों की निगाहें गेंद पर टिकी हैं। कभी चौका खुशी की लहर दौड़ाता है, तो कभी विकेट मैच की दिशा बदल देता है। बीस-बीस क्रिकेट का यही अनिश्चित और तीव्र स्वरूप उसे अत्यंत रोमांचक बनाता है।

इस प्रारूप में प्रत्येक टीम को बीस ओवर मिलते हैं। कम समय में अधिक रन बनाने का दबाव बल्लेबाजों को आक्रामक खेल के लिए प्रेरित करता है। गेंदबाज गति और दिशा में परिवर्तन करते हैं, जबकि चुस्त क्षेत्ररक्षक एक-एक रन बचाने में जुटे रहते हैं। यहाँ कप्तान का गेंदबाजी बदलने या क्षेत्ररक्षण सजाने का निर्णय भी निर्णायक हो सकता है। इसलिए यह केवल लंबे छक्कों का खेल नहीं, सूझबूझ और टीम के तालमेल की परीक्षा भी है।

सीमित अवधि के कारण व्यस्त दर्शक भी पूरा मुकाबला देख पाते हैं। युवा खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है। फिर भी मनोरंजन और व्यावसायिक आकर्षण के बीच खेलभावना बचाए रखना आवश्यक है। जीत की अधीरता, खिलाड़ियों पर अनावश्यक दबाव और दर्शकों की असहिष्णुता खेल का आनंद घटाते हैं।

बीस-बीस क्रिकेट ने क्रिकेट में नई ऊर्जा भरी है। उसका वास्तविक आकर्षण रोमांच के साथ अनुशासन, कौशल और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा में है। हार-जीत का सम्मान करते हुए खेल का आनंद लेना ही सच्चे खेलप्रेमी की पहचान है।

चरण 4: विषय (ग) का आदर्श निबंध **भ्रष्टाचार की समस्या**

जब कोई व्यक्ति निजी लाभ के लिए अपने पद, अधिकार या कर्तव्य का दुरुपयोग करता है, तब भ्रष्टाचार जन्म लेता है। रिश्वत, पक्षपात, सार्वजनिक धन की हेराफेरी और अनुचित लाभ दिलाना इसके विविध रूप हैं। यह समस्या केवल आर्थिक नहीं, सामाजिक और नैतिक भी है।

लालच, दिखावे की प्रवृत्ति, जटिल प्रक्रियाएँ और जवाबदेही का अभाव भ्रष्टाचार को बढ़ाते हैं। नियमों के पालन के स्थान पर परिचय या

धन के बल पर काम करवाने की आदत इसे सामान्य बना देती है। जब दंड का भय कम और गलत लाभ की संभावना अधिक हो, तो ईमानदार व्यक्ति भी हतोत्साहित होने लगता है।

इसका सबसे अधिक नुकसान सामान्य नागरिक को होता है। गरीब अपने अधिकारों से वंचित रह जाता है और योग्य व्यक्ति पीछे छूट जाता है। घटिया निर्माण, योजनाओं में धन की बर्बादी और सेवाओं में देरी से विकास बाधित होता है। जनता का संस्थाओं पर विश्वास भी कमजोर पड़ता है।

समाधान के लिए प्रक्रियाएँ सरल और पारदर्शी हों, निर्णयों की जवाबदेही तय हो तथा शिकायतों की निष्पक्ष जाँच हो। विद्यालय और परिवार ईमानदारी का व्यवहारिक संस्कार दें। नागरिक स्वयं अनुचित सुविधा लेने से बचें और गलत काम का विरोध करें। भ्रष्टाचार मिटाने का संघर्ष शासन और समाज दोनों का साझा दायित्व है। जब अधिकार के साथ कर्तव्य और लाभ के साथ नैतिकता जुड़ेगी, तभी स्वच्छ सार्वजनिक जीवन संभव होगा।

चरण 5: विषय (घ) का आदर्श निबंध **प्रगति पथ पर भारत**

स्वतंत्रता के बाद भारत ने अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए विकास की लंबी यात्रा तय की है। विविध भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं वाला हमारा देश लोकतंत्र के आधार पर आगे बढ़ रहा है। उसकी प्रगति का स्वरूप केवल भौतिक निर्माण में नहीं, नागरिकों की बढ़ती आकांक्षाओं में भी दिखाई देता है।

कृषि में सुधार ने खाद्यान्न उत्पादन की क्षमता बढ़ाई है। उद्योग, संचार और परिवहन के विस्तार ने आर्थिक गतिविधियों को गति दी है। विज्ञान और अंतरिक्ष अनुसंधान में भारतीय प्रतिभा ने अपनी पहचान बनाई है। शिक्षा का प्रसार, स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास तथा विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी भी सामाजिक परिवर्तन के संकेत हैं।

फिर भी उपलब्धियों के साथ चुनौतियाँ बनी हुई हैं। गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और क्षेत्रीय असमानता प्रगति के लाभ को सब तक पहुँचने से रोकती हैं। पर्यावरण का क्षरण भविष्य की समृद्धि के लिए खतरा है। यदि गाँवों, वंचित वर्गों और कमजोर नागरिकों की आवश्यकताएँ उपेक्षित रहें, तो विकास अधूरा रहेगा।

आगे बढ़ने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगारपरक कौशल, वैज्ञानिक सोच और उत्तरदायी प्रशासन आवश्यक हैं। प्रत्येक नागरिक ईमानदारी से अपना कार्य करे, सार्वजनिक संपत्ति बचाए और सामाजिक सद्भाव बनाए रखे। भारत की सच्ची उन्नति तभी होगी जब आर्थिक शक्ति के साथ समान अवसर, मानवीय गरिमा और प्रकृति का संरक्षण भी बढ़े। यही समावेशी प्रगति राष्ट्र को सुदृढ़ बनाएगी।

चरण 6: निष्कर्ष चारों विषयों के निबंध भूमिका, क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक समापन पर आधारित हैं। चुने हुए विषय पर उपयोगिता अथवा उपलब्धियों के साथ समस्याओं और सुधार के उपायों का संतुलित विवेचन प्रस्तुत करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: लिखने से पहले चुने विषय के चार संकेत लिख लें: परिचय, मुख्य पक्ष, चुनौती और उपाय। इन्हीं से अनुच्छेद बनाकर निबंध को विषय पर केंद्रित रखें।

4. एक सड़क को चौड़ा करने के बहाने आवश्यकता से बहुत अधिक पेड़ काटे गए हैं, इसकी विस्तृत जानकारी देते हुए वन और पर्यावरण विभाग को एक पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र में संबंधित अधिकारी को समस्या का स्थान, स्वरूप और प्रभाव बताते हुए उचित कार्रवाई का निवेदन किया जाता है। भाषा स्पष्ट, शिष्ट और तथ्यपरक होनी चाहिए।
- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य तथा समापन का क्रम रखा जाता है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय-वस्तु तय करें पत्र वन और पर्यावरण विभाग के अधिकारी को संबोधित होगा। मुख्य कथ्य में सड़क चौड़ी करने की योजना, आवश्यक सीमा से बाहर हुई कटाई, पेड़ों के नष्ट होने से हुई हानि और विभाग से अपेक्षित कार्रवाई रखें। स्थल-निरीक्षण, अनुमति की जाँच, अनावश्यक कटाई रोकने और उचित पुनर्वनीकरण का अनुरोध करें। नीचे मॉडल पत्र में स्थान और

दिनांक उदाहरण के लिए दिए गए हैं।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र लिखें 24, शांति नगर
दिल्ली
28 मार्च, 2009
सेवा में,
निदेशक महोदय,
वन और पर्यावरण विभाग,
दिल्ली।

विषय: सड़क चौड़ी करने के नाम पर आवश्यकता से अधिक पेड़ों की कटाई की शिकायत।

महोदय,

मैं आपका ध्यान शांति नगर की मुख्य सड़क पर हुई अत्यधिक वृक्ष-कटाई की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले सप्ताह सड़क चौड़ी करने का काम शुरू हुआ था। इसके लिए मार्ग में आने वाले कुछ पेड़ हटाने की बात कही गई थी, किंतु सड़क के निर्धारित विस्तार से दूर खड़े स्वस्थ और पुराने पेड़ भी काट दिए गए हैं। आसपास के खुले स्थानों की हरियाली भी नष्ट कर दी गई है। निवासियों के पूछने पर कटाई की स्वीकृत सीमा के संबंध में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी गई।

इन पेड़ों से यात्रियों को छाया मिलती थी और पक्षियों को आश्रय मिलता था। कटाई से क्षेत्र में धूल बढ़ गई है तथा पैदल चलने वालों को परेशानी हो रही है। हरियाली घटने से स्थानीय पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। सड़क का विकास आवश्यक है, पर उसके नाम पर अनावश्यक कटाई उचित नहीं है।

अतः आपसे अनुरोध है कि विभागीय दल भेजकर स्थल का निरीक्षण कराएँ और सड़क के स्वीकृत नक्शे तथा वृक्ष-कटाई की अनुमति की जाँच करें। शेष पेड़ों की अनावश्यक कटाई तुरंत रोकी जाए। दोष पाए जाने पर संबंधित लोगों के विरुद्ध उचित कार्रवाई की जाए। साथ ही उपयुक्त स्थानों पर स्थानीय प्रजातियों के नए पौधे लगवाकर उनकी नियमित देखभाल सुनिश्चित की जाए। कृपया की गई कार्रवाई से निवासियों को भी अवगत कराएँ।

धन्यवाद।

भवदीय,
अमित कुमार
निवासी, शांति नगर

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में सड़क-विस्तार के नाम पर हुई अनावश्यक कटाई और उसके पर्यावरणीय प्रभावों की जानकारी देते हुए निरीक्षण, जाँच, कटाई पर रोक तथा पौधरोपण का स्पष्ट निवेदन किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत के बाद केवल "कार्रवाई करें" न लिखें; निरीक्षण, अनुमति की जाँच, बची हरियाली की सुरक्षा और पौधों की देखभाल जैसे ठोस अनुरोध जोड़ें।

अथवा

4. सड़क पर आप दुर्घटना ग्रस्त हो गए थे। पुलिस मूक दर्शक बनी रही। कुछ राहगीरों ने आपको अस्पताल पहुँचाया। पूरी जानकारी देते हुए अपने क्षेत्र के थानाध्यक्ष को पत्र लिखकर प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखने का निवेदन कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- थानाध्यक्ष को शिकायत-पत्र में दुर्घटना के समय, स्थान, घटनाक्रम और संबंधित व्यक्तियों की जानकारी तथ्यात्मक तथा क्रमबद्ध ढंग से दी जाती है।
- पत्र का उद्देश्य प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने का अनुरोध करना है। पुलिस की निष्क्रियता का उल्लेख संयत भाषा में होना चाहिए

और उपलब्ध साक्ष्यों की जानकारी भी देनी चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निश्चित कीजिए प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर थानाध्यक्ष का पद तथा थाने का पता दें। विषय में सड़क दुर्घटना की प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने का निवेदन स्पष्ट करें। संबोधन के बाद घटना, सहायता, उपचार तथा अपेक्षित कार्रवाई अलग अनुच्छेदों में रखें। अंत में धन्यवाद, समापन, नाम और संलग्नकों का उल्लेख करें।

चरण 2: सूचनाओं को क्रम में रखिए घटना का दिन, समय और स्थान पहले आएँ। फिर वाहन की टक्कर, चोट, चालक के भागने, वहाँ उपस्थित पुलिसकर्मियों की निष्क्रियता और राहगीरों की सहायता का वर्णन करें। अस्पताल के अभिलेख तथा प्रत्यक्षदर्शियों की जानकारी जाँच में सहायक हैं। नमूना पत्र में इन्हीं बिंदुओं को एक संगत घटनाक्रम में रखा गया है।

चरण 3: पूरा नमूना पत्र लिखिए 24, शांति नगर, दिल्ली।

दिनांक: 25 मार्च, 2009।

सेवा में,

थानाध्यक्ष महोदय,

थाना शांति नगर, दिल्ली।

विषय: सड़क दुर्घटना की प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने हेतु निवेदन।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि 24 मार्च, 2009 को सायं लगभग 5 बजे मैं शांति नगर के मुख्य चौराहे पर पैदल सड़क पार कर रहा था। तभी लाल रंग की तेज रफ्तार कार ने मुझे टक्कर मार दी। मैं सड़क पर गिर पड़ा और मेरे दाएँ पैर तथा सिर में चोट आई। चालक कार लेकर बाजार की ओर भाग गया। चोट लगने के कारण मैं वाहन का पूरा नंबर नहीं देख सका।

चौराहे पर दो पुलिसकर्मी उपस्थित थे, किंतु मेरी सहायता की पुकार के बावजूद वे मूक दर्शक बने रहे। कुछ राहगीरों ने मुझे संभाला और निकट के सरकारी अस्पताल पहुँचाया। वहाँ मेरा उपचार किया गया। सहायता करने वाले प्रत्यक्षदर्शी श्री सुरेश कुमार का पता 18, शांति नगर है। अस्पताल की उपचार-पर्ची और उपलब्ध चिकित्सकीय अभिलेखों की प्रतियाँ पत्र के साथ संलग्न हैं।

अत: आपसे निवेदन है कि मेरी शिकायत के आधार पर प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कर दुर्घटना की जाँच कराएँ। प्रत्यक्षदर्शियों के बयान लेकर कार और चालक की पहचान कर उचित कार्रवाई करें। वहाँ उपस्थित पुलिसकर्मियों की निष्क्रियता की भी जाँच की जाए। कृपया मुझे दर्ज रिपोर्ट की प्रति उपलब्ध कराएँ। मैं जाँच में पूरा सहयोग देने को तैयार हूँ।

धन्यवाद।

भवदीय,

राहुल कुमार।

संलग्नक: उपचार-पर्ची तथा चिकित्सकीय अभिलेखों की प्रतियाँ।

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में दुर्घटना का पूरा विवरण, पुलिस की निष्क्रियता, राहगीरों की सहायता और उपलब्ध साक्ष्य बताते हुए प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने तथा जाँच का स्पष्ट निवेदन किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत-पत्र लिखते समय दिनांक, समय, स्थान, घटना, साक्ष्य और अपेक्षित कार्रवाई की क्रमवार जाँच करें; आरोप बताते हुए भी भाषा संयत रखें।

5(क)(i). संक्षेप में उत्तर दीजिए: जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में मुद्रित, श्रव्य तथा दृश्य-श्रव्य माध्यम आते हैं।
- प्रचलित आधुनिक जनसंचार माध्यमों के इतिहास में मुद्रित माध्यम सबसे पुराना है।

चरण 1: प्रश्न का संदर्भ पहचानिए यहाँ प्रचलित जनसंचार माध्यमों की बात है। अत: उत्तर में मुद्रित माध्यम, रेडियो और टेलीविजन

जैसी माध्यम-श्रेणियों में सबसे पुरानी श्रेणी बतानी है।

चरण 2: माध्यम का उदाहरण दीजिए मुद्रण के माध्यम से एक ही सामग्री की अनेक प्रतियाँ तैयार करके व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँचाई जाती हैं। समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ इसी मुद्रित माध्यम के प्रमुख रूप हैं। रेडियो और टेलीविजन बाद में विकसित हुए।

चरण 3: निष्कर्ष जनसंचार के प्रचलित माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम मुद्रित माध्यम है; समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में पहले माध्यम-श्रेणी का नाम लिखें: मुद्रित माध्यम; फिर समाचार-पत्र का उदाहरण दें।

5(क)(ii). मुद्रित माध्यम को स्थायी माध्यम क्यों कहा गया है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में सामग्री कागज पर अक्षरों के रूप में दर्ज रहती है।
- स्थायित्व का अर्थ प्रकाशित सामग्री को सँभालकर रखना और आवश्यकता होने पर पुनः पढ़ पाना है।

चरण 1: प्रकाशित सामग्री का रूप देखिए समाचार-पत्र, पत्रिकाओं और पुस्तकों की सामग्री पढ़ने के बाद समाप्त नहीं हो जाती। उसकी मुद्रित प्रति पाठक के पास बनी रह सकती है।

चरण 2: पुनः उपयोग की सुविधा समझिए पाठक मुद्रित सामग्री को सुरक्षित रखकर अपनी सुविधा से बार-बार पढ़ सकता है तथा भविष्य में संदर्भ के रूप में उसका उपयोग कर सकता है। इसी संग्रह और पुनर्पाठ की सुविधा के कारण मुद्रित माध्यम को स्थायी कहा जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित सामग्री को सुरक्षित रखकर बार-बार पढ़ा और भविष्य में संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा सकता है; इसलिए मुद्रित माध्यम स्थायी माध्यम कहलाता है।

त्वरित सुझाव: स्थायित्व का कारण लिखते समय सुरक्षित रखने, दोबारा पढ़ने और संदर्भ में उपयोग करने की सुविधा जोड़ें।

5(क)(iii). संपादकीय से क्या तात्पर्य है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र का संस्थागत दृष्टिकोण व्यक्त करता है।
- इसमें विषय का विवेचन, विश्लेषण और मूल्यांकन होता है; यह केवल घटना की सूचना नहीं देता।

चरण 1: लेख का स्वरूप पहचानिए संपादकीय समाचार-पत्र के संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित विचारप्रधान लेख होता है। इसमें किसी महत्वपूर्ण घटना, समस्या या नीति को विचार का विषय बनाया जाता है।

चरण 2: उसका प्रतिनिधित्व स्पष्ट कीजिए यह लेख संबंधित विषय पर समाचार-पत्र की राय और नीति का प्रतिनिधित्व करता है। समाचार में घटना के तथ्य प्रमुख होते हैं, जबकि संपादकीय उन तथ्यों का विश्लेषण करके दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी महत्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र की राय, नीति और दृष्टिकोण व्यक्त करने वाला विचारप्रधान लेख संपादकीय कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में विषय के साथ समाचार-पत्र की अपनी राय और दृष्टिकोण अवश्य लिखें; इसे सामान्य समाचार न कहें।

5(क)(iv). रिपोर्ट लेखन की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट घटना की जानकारी पाठक तक स्पष्ट और विश्वसनीय ढंग से पहुँचाती है।
- उसकी भाषा सहज बोधगम्य तथा तथ्यपरक होनी चाहिए, ताकि सूचना समझने में भ्रम न हो।

चरण 1: पहली विशेषता स्पष्ट कीजिए **सरल और स्पष्ट भाषा:** शब्द प्रचलित तथा वाक्य सीधे हों, जिससे पाठक घटना को आसानी से समझ सके। अनावश्यक अलंकार और कठिन शब्द सूचना की स्पष्टता घटाते हैं।

चरण 2: दूसरी विशेषता स्पष्ट कीजिए **तथ्यपरक और निष्पक्ष भाषा:** विवरण प्रमाणित सूचनाओं पर आधारित हो। उसमें लेखक की निजी भावुकता, पक्षपात या अतिशयोक्ति न हो, जिससे घटना का वास्तविक स्वरूप सामने आए।

चरण 3: निष्कर्ष रिपोर्ट लेखन की भाषा की दो विशेषताएँ हैं: सरल एवं स्पष्ट होना तथा तथ्यपरक एवं निष्पक्ष होना।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ माँगी गई हों तो सरल- स्पष्ट और तथ्यपरक- निष्पक्ष के दो अलग बिंदु बनाकर लिखें।

5(क)(v). 'खोजी पत्रकारिता' का आशय स्पष्ट कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोजी पत्रकारिता जनहित से जुड़े उन तथ्यों को सामने लाती है जिन्हें छिपाया जा रहा हो।
- इसमें गहन जाँच, विभिन्न स्रोतों से सूचना-संग्रह और प्रमाणों का सत्यापन आवश्यक होता है।

चरण 1: खोज का उद्देश्य बताइए समाज में भ्रष्टाचार, अनियमितता या अन्य जनहित-विरोधी गतिविधियों की सच्चाई कई बार सामान्य समाचार-सूचनाओं से स्पष्ट नहीं होती। पत्रकार ऐसे छिपे तथ्यों की तह तक पहुँचने का प्रयास करता है।

चरण 2: जाँच और प्रमाण की भूमिका समझिए पत्रकार दस्तावेजों, प्रत्यक्षदर्शियों और अन्य विश्वसनीय स्रोतों से तथ्य जुटाता है तथा उनकी पुष्टि करके उन्हें सार्वजनिक करता है। केवल अफवाह या अप्रमाणित आरोप प्रकाशित करना खोजी पत्रकारिता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष जनहित से संबंधित छिपे तथ्यों को गहन जाँच और प्रमाणों के आधार पर खोजकर जनता के सामने लाना खोजी पत्रकारिता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में छिपे तथ्य, गहन जाँच, प्रमाण और जनहित का संबंध स्पष्ट करके खोजी पत्रकारिता की पहचान बताइए।

5(ख). आप के क्षेत्र में आकस्मिक बाढ़ के कारण यातायात की संपूर्ण व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई है। जान-माल की बहुत क्षति हुई है। इन बिन्दुओं के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट किसी घटना का तथ्यपरक, क्रमबद्ध और संक्षिप्त विवरण होती है। इसमें क्या, कहाँ, कब, कैसे और किस पर प्रभाव पड़ा जैसे प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं।
- समाचार-रिपोर्ट में शीर्षक, संवाददाता का परिचय, स्थान और तिथि के बाद घटना का विवरण दिया जाता है। भाषा स्पष्ट और वस्तुनिष्ठ रखी जाती है।

चरण 1: रिपोर्ट का प्रारूप तय करना बाढ़ और उससे उत्पन्न संकट को व्यक्त करने वाला संक्षिप्त शीर्षक लिखेंगे। उसके नीचे संवाददाता,

स्थान और तिथि देंगे। आरंभिक अनुच्छेद में आकस्मिक बाढ़ तथा यातायात पर उसके प्रभाव का मुख्य समाचार आएगा। आगे जनजीवन, जान-माल की क्षति और राहत की स्थिति का क्रमवार उल्लेख करेंगे।

चरण 2: विषयवस्तु का क्रम बनाना रिपोर्ट के केंद्र में प्रश्न में दिए गए तीन तथ्य रहेंगे: अचानक आई बाढ़, यातायात की संपूर्ण अव्यवस्था और जान-माल की भारी क्षति। सड़कें डूबने, लोगों के फँसने और सामान नष्ट होने जैसे विवरण इन तथ्यों को स्पष्ट करेंगे। क्षति की अपुष्ट संख्या देने से बचेंगे। अंत में बचाव, राहत और सामान्य यातायात बहाल करने की आवश्यकता बताएँगे।

चरण 3: पूर्ण नमूना रिपोर्ट **आकस्मिक बाढ़ से जनजीवन ठप, यातायात अस्त-व्यस्त**

विशेष संवाददाता

पटना, 16 अगस्त, 2009। क्षेत्र में अचानक आई बाढ़ से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो गया है। मुख्य सड़कों और संपर्क मार्गों पर पानी भर जाने से यातायात की पूरी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई है। अनेक वाहन रास्ते में फँस गए हैं और कई बस्तियों का संपर्क आसपास के क्षेत्रों से टूट गया है। यात्रियों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचने में भारी कठिनाई हो रही है।

बाढ़ में कई लोगों की जान चली गई है तथा बड़ी संख्या में परिवारों को अपने घर छोड़ने पड़े हैं। कच्चे मकान क्षतिग्रस्त हो गए हैं। घरों में रखा अनाज, कपड़े और अन्य आवश्यक सामान पानी में डूब गया है। खेतों में खड़ी फसलों तथा दुकानों को भी भारी नुकसान पहुँचा है। जान-माल की क्षति का पूरा आकलन अभी शेष है।

स्थानीय लोग फँसे हुए परिवारों को सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाने में सहायता कर रहे हैं। प्रभावित बस्तियों में भोजन, स्वच्छ पेयजल, दवाओं और अस्थायी आश्रय की तत्काल आवश्यकता है। स्थानीय निवासियों ने प्रशासन से बचाव कार्य तेज करने और राहत सामग्री उपलब्ध कराने की माँग की है। संपर्क मार्गों को खोलना तथा प्रभावित परिवारों तक सहायता पहुँचाना इस समय सबसे बड़ी चुनौती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस रिपोर्ट में आकस्मिक बाढ़ की घटना, यातायात की अव्यवस्था, जान-माल की क्षति और राहत की आवश्यकता को समाचार के निर्धारित प्रारूप में प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: बाढ़ की रिपोर्ट में पहले मुख्य घटना, फिर यातायात और क्षति का विवरण लिखें; अपुष्ट मृतक-संख्या जोड़ने के बजाय राहत की वास्तविक जरूरतें स्पष्ट करें।

अथवा

5(ख). रोगी मित्र को अस्पताल ले जाने पर ज्ञात हुआ कि सभी डॉक्टर हड़ताल पर हैं। सभी रोगियों की दशा दयनीय हो गई है। इस विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय पर अनुभव, विचार और तर्क क्रमबद्ध रूप में रखे जाते हैं। प्रभावी आलेख का शीर्षक विषय के केंद्रीय प्रश्न को स्पष्ट करता है।
- इस विषय में रोगियों की पीड़ा, चिकित्सा सेवा का मानवीय दायित्व और समस्या के व्यावहारिक समाधान को संतुलित दृष्टि से प्रस्तुत करना आवश्यक है।

चरण 1: आलेख की रूपरेखा बनाना शीर्षक और लेखक के नाम से शुरुआत करेंगे। भूमिका में रोगी मित्र को अस्पताल ले जाने का अनुभव आएगा। मध्य भाग में डॉक्टरों की हड़ताल से रोगियों और उनके परिजनों पर पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा होगी। अंतिम भाग में संवाद, वैकल्पिक चिकित्सा व्यवस्था और आपातकालीन सेवाओं की निरंतरता के सुझाव देंगे। आलेख का स्वर संवेदनशील और विचारपूर्ण होगा।

चरण 2: तर्कों का संतुलन रखना रोगियों की दयनीय स्थिति विषय का केंद्र है। इसलिए उपचार के अभाव, प्रतीक्षा और परिजनों की विवशता को स्पष्ट करेंगे। साथ ही डॉक्टरों की सेवा-संबंधी समस्याओं के समाधान की जरूरत स्वीकार करेंगे। बिना प्रमाण किसी पक्ष पर आरोप लगाने के बजाय यह बताएँगे कि विवाद सुलझाने की प्रक्रिया में रोगियों का जीवन सुरक्षित रखना सबकी साझा जिम्मेदारी है।

चरण 3: पूर्ण नमूना आलेख **डॉक्टरों की हड़ताल और रोगियों की पीड़ा**

लेखक: अभिषेक

बीमार मित्र को लेकर जब मैं अस्पताल पहुँचा, तो वहाँ का दृश्य व्यथित कर देने वाला था। सभी डॉक्टर हड़ताल पर थे। कोई रोगी दर्द से कराह रहा था, तो किसी के परिजन सहायता के लिए इधर-उधर भटक रहे थे। उपचार की आशा लेकर आए लोगों के चेहरों पर भय और निराशा थी। मेरा मित्र भी सहायता की प्रतीक्षा में बेचैन था।

अस्पताल वह स्थान है जहाँ मनुष्य संकट की घड़ी में भरोसा लेकर आता है। वहाँ चिकित्सा सेवा रुक जाने से सबसे अधिक कठिनाई गंभीर रोगियों, बच्चों, वृद्धों और आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को होती है। निजी अस्पतालों का महँगा उपचार प्रत्येक परिवार की पहुँच में नहीं होता। समय पर सहायता न मिलने से रोगियों की तकलीफ और परिजनों की चिंता दोनों बढ़ती हैं।

डॉक्टरों की कामकाजी कठिनाइयों, सुरक्षा और उचित सुविधाओं के प्रश्नों की उपेक्षा भी नहीं होनी चाहिए। प्रशासन को उनकी उचित माँगों पर समय रहते संवाद करना चाहिए। किंतु रोगियों की जान को संकट में डालने वाली स्थिति का समाधान तत्काल आवश्यक है। आपातकालीन सेवाएँ जारी रखने, वैकल्पिक चिकित्सकीय दल उपलब्ध कराने और रोगियों को सही जानकारी देने की व्यवस्था होनी चाहिए।

चिकित्सा सेवा का आधार मानवीय संवेदना है। सरकार, अस्पताल प्रशासन और चिकित्सक मिलकर ऐसा रास्ता निकालें जिसमें समस्याओं का समाधान भी हो और रोगी उपचार से वंचित भी न रहें। किसी विवाद की कीमत असहाय रोगियों को अपनी पीड़ा और जीवन से नहीं चुकानी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख का केंद्रीय विचार है कि डॉक्टरों की समस्याएँ संवाद से सुलझाई जाएँ और प्रत्येक परिस्थिति में रोगियों के उपचार, विशेषकर आपातकालीन चिकित्सा, की निरंतरता सुनिश्चित की जाए।

त्वरित सुझाव: अस्पताल के अनुभव से भूमिका शुरू करें, रोगियों की पीड़ा के कारण समझाएँ और अंत में संवाद तथा निरंतर आपातकालीन सेवा जैसे ठोस उपाय दें।

6. 'वाहनों की बढ़ती संख्या' अथवा 'महँगाई के बोझ तले मज़दूर' विषय पर एक फीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर किसी सामाजिक विषय के तथ्यात्मक पक्ष को रोचक, संवेदनशील और वर्णनात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें आकर्षक शीर्षक, जीवंत आरंभ, विषय का विस्तार और प्रभावी समापन होता है।
- समस्या के मानवीय प्रभाव, कारण और संभावित उपाय दिखाएँ। अप्रमाणित आँकड़े या किसी वास्तविक व्यक्ति के नाम से मनगढ़ंत कथन न दें। दोनों वैकल्पिक विषयों के नमूने नीचे दिए गए हैं।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय कीजिए 'वाहनों की बढ़ती संख्या' में सड़क का दृश्य लेकर यातायात, प्रदूषण और सार्वजनिक परिवहन की चर्चा करें। 'महँगाई के बोझ तले मज़दूर' में घरेलू बजट की कठिनाई से आरंभ करके भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य पर प्रभाव दिखाएँ। शीर्षक और लेखक के नाम के बाद अनुच्छेदों में लिखें। फीचर को केवल समस्याओं की सूची न बनाएँ; दृश्य और विवेचन का संबंध बनाए रखें।

चरण 2: पहले विषय का पूरा नमूना पढ़िए **पहियों की भीड़ में ठहरता शहर**

लेखक: एक विद्यार्थी

सुबह का समय है। सड़क के एक छोर से दूसरे छोर तक गाड़ियों की कतार लगी है। हॉर्न की आवाज़ों के बीच कोई दफ्तर पहुँचने की जल्दी में है, तो कोई स्कूल की बस छूटने से परेशान। तेज़ सफर के लिए खरीदे गए वाहन अब एक-दूसरे की राह रोक रहे हैं।

बदलती जीवनशैली, शहरों का विस्तार और निजी वाहन रखने की आकांक्षा ने सड़कों पर दबाव बढ़ाया है। जहाँ सार्वजनिक परिवहन सुविधाजनक नहीं होता, वहाँ लोग अपने वाहन पर निर्भर हो जाते हैं। परिणाम केवल जाम नहीं है। इंजन चालू रहने से ईंधन व्यर्थ जाता है और धुआँ हवा को दूषित करता है। लगातार शोर मन को थकाता है। पैदल चलने वाले, साइकिल सवार और बुज़ुर्ग भीड़ में सबसे अधिक

असहज महसूस करते हैं।

सड़कें चौड़ी करना अकेला समाधान नहीं हो सकता। भरोसेमंद बस सेवा, सुरक्षित पैदल मार्ग और साइकिल के लिए जगह उतनी ही आवश्यक हैं। साझा यात्रा, अनावश्यक निजी यात्राओं में कमी और यातायात नियमों का पालन नागरिकों की जिम्मेदारी है। वाहन खरीदने की सुविधा के साथ उन्हें खड़ा करने और चलाने की सामाजिक लागत पर भी विचार होना चाहिए।

शहर की प्रगति का अर्थ गाड़ियों की लंबी कतारें नहीं, लोगों का सहज आवागमन है। रास्ता तभी खुलेगा, जब निजी सुविधा के साथ सार्वजनिक हित भी हमारी यात्रा का साथी बनेगा।

चरण 3: दूसरे विषय का पूरा नमूना पढ़िए **दिहाड़ी छोटी, ज़रूरतों की सूची लंबी**

लेखक: एक विद्यार्थी

बाज़ार का थैला भरने से पहले ही जेब खाली होने लगे, तो घर का बजट केवल हिसाब नहीं रहता, चिंता बन जाता है। महँगाई से जूझते मज़दूर के लिए रसोई का हर डिब्बा एक प्रश्न है: आज क्या खरीदा जाए और क्या अगले दिन तक टाल दिया जाए?

जिस परिवार की आय रोज़ काम मिलने पर निर्भर हो, उसके लिए वस्तुओं की बढ़ती कीमतें अधिक कठिनाई लाती हैं। दाल, सब्ज़ी, ईंधन और किराए का खर्च बढ़े, पर मजदूरी उसी अनुपात में न बढ़े, तो मेहनत के बाद भी आवश्यकताएँ अधूरी रहती हैं। बीमारी या काम बंद होने का एक दिन इस असुरक्षा को और गहरा कर देता है।

बचत घटने का असर केवल भोजन पर नहीं पड़ता। बच्चों की पढ़ाई, दवाइयाँ और आवागमन भी परिवार के सीमित बजट में हिस्सा माँगते हैं। कई बार परिवार उधार लेता है और अगली कमाई का कुछ भाग पहले ही बँध जाता है। शहर बनाने वाले हाथ अपने ही घर की छोटी ज़रूरतों के सामने विवश दिखाई देते हैं।

समाधान के लिए उचित और समय पर मजदूरी, सस्ता राशन, सुलभ स्वास्थ्य सेवा तथा रोजगार की सुरक्षा आवश्यक हैं। आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता बनाए रखना और जमाखोरी रोकना भी जरूरी है। मज़दूर का जीवन केवल खर्च घटाने की सलाह से नहीं सुधरेगा; उसकी आय और सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करना होगा।

मेहनत का सम्मान तभी सार्थक है, जब मेहनतकश परिवार भरपेट भोजन और गरिमा के साथ जी सके।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों फीचरों में शीर्षक, लेखक-नाम, मानवीय दृश्य, समस्या का विस्तार और समाधानपरक समापन है। परीक्षा में प्रश्न के अनुसार इनमें से किसी एक विषय पर सुसंगठित फीचर लिखा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: वाहनों वाले फीचर में सड़क का दृश्य और मज़दूर वाले फीचर में घरेलू बजट का दृश्य चुनें; फिर उसी दृश्य से कारण, प्रभाव और उपाय जोड़ें।

7(क). किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: रुद्ध कोष है, क्षुब्धतोष अंगना-अंग से लिपटे भी आतंक अंक पर काँप रहे हैं धनी, वज्र गर्जन से बादल। त्रस्त नयन, मुख ढाँप रहे हैं। जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर। तुझे बुलाता कृषक अधीर, ऐ विप्लव के वीर! 'विप्लव के वीर' किसे कहा गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला के काव्यांश में बादल प्रकृति का रूप होने के साथ सामाजिक परिवर्तन और क्रांति का प्रतीक भी है।
- 'विप्लव' का अर्थ क्रांति है। संबोधन का अर्थ स्पष्ट करने के लिए बादल के प्रभाव को धनी वर्ग और पीड़ित कृषक, दोनों से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: संबोधन का लक्ष्य पहचानिए 'ऐ विप्लव के वीर!' कहकर बादल को संबोधित किया गया है। इससे ठीक पहले 'तुझे बुलाता कृषक अधीर' आता है। कृषक जिस बादल को पुकार रहा है, उसी को कवि क्रांति के वीर के रूप में प्रस्तुत करता है। अतः यहाँ यह संबोधन किसी धनवान व्यक्ति या किसान का नाम नहीं है।

चरण 2: क्रांतिकारी स्वरूप का कारण समझिए बादल का 'वज्र गर्जन' संपन्न शोषक वर्ग को भयभीत करता है। दूसरी ओर, जीर्ण शरीर वाला कृषक उससे आशा रखता है। बादल की वर्षा खेती को नया जीवन देती है और उसका क्रांतिकारी रूप शोषणपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तन की संभावना जगाता है। पुराने अन्याय को चुनौती देने तथा पीड़ितों में नई आशा जगाने के कारण उसे वीर कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को 'विप्लव के वीर' कहा गया है, क्योंकि वह क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक है। उसकी गर्जना शोषकों को आतंकित करती है, जबकि पीड़ित कृषक उससे जीवन, आशा और शोषण से मुक्ति की अपेक्षा करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'बादल' का नाम दें; फिर धनी वर्ग का भय और कृषक की आशा बताकर 'विप्लव' का प्रतीकार्थ स्पष्ट करें।

7(ख). बादलों को बुलाने में कृषक की अधीरता का कारण स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कृषक की अधीरता उसके अभावग्रस्त जीवन और बादल से जुड़ी आशा को व्यक्त करती है।
- बादल का प्राकृतिक अर्थ वर्षा देने वाला मेघ और प्रतीकात्मक अर्थ क्रांति लाने वाली शक्ति है। दोनों अर्थ कृषक की पुकार को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: कृषक की दशा पहचानिए 'जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर' से स्पष्ट है कि किसान का शरीर दुर्बल और क्षीण हो गया है। निरंतर श्रम करने पर भी उसे सुख और समृद्धि नहीं मिली है। उसका जीवन अभाव और शोषण से घिरा है। इसलिए बादलों के लिए उसकी पुकार केवल प्राकृतिक सौंदर्य देखने की इच्छा नहीं, अपने संकट से निकलने की व्याकुलता है।

चरण 2: बादल से जुड़ी अपेक्षा स्पष्ट कीजिए वर्षा से खेतों को पानी मिलेगा और फसल के माध्यम से कृषक की जीविका को आधार मिलेगा। साथ ही, कवि ने बादल को 'विप्लव के वीर' कहा है। इस प्रतीकात्मक रूप में किसान उससे ऐसी क्रांति की आशा रखता है जो शोषण और विषमता को दूर करे। जीवन में राहत और परिवर्तन की तीव्र चाह के कारण वह बादलों के आगमन की प्रतीक्षा अधीर होकर करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अभाव और शोषण से क्षीण कृषक बादलों को अधीर होकर बुलाता है। उसे वर्षा से खेती और जीविका सँवरने तथा बादल के क्रांतिकारी रूप से अन्यायपूर्ण व्यवस्था बदलने की आशा है।

त्वरित सुझाव: 'जीर्ण' और 'शीर्ण' से किसान की वर्तमान दशा तथा 'विप्लव के वीर' से उसके भविष्य की आशा जोड़कर कारण लिखें।

7(ग). काव्यांश के आधार पर शोषक-समाज का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शोषक समाज का चित्रण उसके धन-संचय, भोग-विलास और क्रांति के प्रति भय के माध्यम से किया गया है।
- काव्यांश में धनी वर्ग की संपन्नता के सामने कृषक का क्षीण शरीर रखा गया है। इस विरोध से सामाजिक विषमता स्पष्ट होती है।

चरण 1: संपन्न वर्ग की जीवन-दृष्टि पहचानिए शोषक वर्ग अपने संचित धन और सुख-सुविधाओं में डूबा हुआ है। उसका वैभव व्यापक समाज के हित में काम नहीं आता। अंगनाओं से लिपटे धनी व्यक्तियों का चित्र उनके भोग-विलास को सामने लाता है। इसके विपरीत किसान का शरीर दुर्बल है। दोनों स्थितियों को साथ रखने से संपत्ति और सुख के असमान वितरण का बोध होता है।

चरण 2: क्रांति के प्रति उसकी प्रतिक्रिया बताइए बादल की वज्र जैसी गर्जना सुनकर धनी लोग आतंकित हो जाते हैं। वे काँपते हैं और मुँह ढाँप लेते हैं। उन्हें भय है कि परिवर्तन आने पर उनका संचित वैभव और शोषण पर आधारित अधिकार सुरक्षित नहीं रहेंगे। सुख-सुविधाओं के बीच भी उनका काँपना दिखाता है कि बाहरी संपन्नता उन्हें आंतरिक निर्भयता नहीं दे सकी है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का शोषक समाज धन-संचयी, विलासी और अपने विशेषाधिकारों की रक्षा में लगा हुआ है। वह कृषक की पीड़ा से दूर है तथा क्रांति की गर्जना से डरकर काँपने और मुँह छिपाने लगता है।

त्वरित सुझाव: चित्रण को तीन सूत्रों में बाँधें: संचित धन, भोग-विलास और क्रांति का भय; समर्थन के लिए काँपते तथा मुख ढाँपते धनी लोगों का उल्लेख करें।

7(घ). सुख-सुविधा भोग रहे धनी लोगों के भयभीत होने का क्या कारण है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल क्रांति और सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक हैं; उनका गर्जन शोषक वर्ग की सत्ता को चुनौती देता है।
- धनी वर्ग की सुख-सुविधाओं के पीछे गरीबों का शोषण है, इसलिए परिवर्तन की संभावना उसे भयभीत करती है।

चरण 1: धनी वर्ग की स्थिति समझना काव्यांश में धनी लोग सुख-सुविधाओं से घिरे हैं, फिर भी बादलों के वज्र जैसे गर्जन से काँप रहे हैं। अपनी अंगना के अंगों से लिपटे होने पर भी उनका भय दूर नहीं होता। इससे स्पष्ट है कि बाहरी ऐश्वर्य और भोग-विलास उन्हें वास्तविक सुरक्षा नहीं दे सकते।

चरण 2: भय का सामाजिक कारण बताना बादलों की गर्जना उस क्रांति का संकेत है जो शोषित किसानों और मजदूरों को जगाएगी। धनी लोगों को आशंका है कि इस जागरण से उनके शोषण, अन्याय और धन पर टिके प्रभुत्व का अंत हो जाएगा। जिस परिवर्तन से गरीब किसान आशावान है, उसी से संपन्न शोषक वर्ग अपनी सुख-सुविधाएँ छिनने के डर से आतंकित है।

चरण 3: निष्कर्ष धनी लोग इसलिए भयभीत हैं कि बादलों की क्रांतिकारी गर्जना उनके शोषण पर आधारित वैभव, प्रभुत्व और सुख-सुविधाओं के समाप्त होने का संकेत देती है।

त्वरित सुझाव: धनी और किसान की प्रतिक्रिया की तुलना करके लिखें: एक को क्रांति से भय है, दूसरे को उससे आशा।

अथवा

7(क). सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच विकलाई। जों जनतेउँ वन बंधु बिछोहू। पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू।। सुत वित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।। अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।। 'सो अनुराग' कह कर राम कैसे अनुराग की दुर्लभता की ओर संकेत कर रहे हैं? सोदाहरण लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम का विलाप लक्ष्मण के निष्काम, समर्पित और अतुलनीय भाई-प्रेम को उजागर करता है।
- प्रश्न में अनुराग का स्वरूप बताने के साथ लक्ष्मण के व्यवहार का उदाहरण देना आवश्यक है।

चरण 1: अनुराग का अर्थ स्पष्ट करना 'सो अनुराग' से राम लक्ष्मण के उस गहरे भाई-प्रेम का स्मरण कर रहे हैं जिसमें अपने सुख की अपेक्षा भाई का सुख अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। लक्ष्मण राम के प्रति इतने स्नेहशील और समर्पित थे कि उनके दुःख को सह नहीं सकते थे। मूर्च्छित लक्ष्मण का राम की व्याकुल पुकार पर भी न उठना राम को उसी प्रेम की याद दिलाता है।

चरण 2: त्याग और सेवा का उदाहरण देना उदाहरण के लिए, लक्ष्मण ने राम के साथ वन जाने के लिए राजमहल का सुख और अपनी पत्नी का साथ छोड़ दिया तथा वनवास में उनकी सेवा और रक्षा की। राम इसी निःस्वार्थ त्यागमय प्रेम को दुर्लभ मानते हैं। 'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता' में वे व्यक्त करते हैं कि ऐसा सहोदर भाई संसार की दूसरी संपत्तियों की तरह फिर प्राप्त नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष राम लक्ष्मण के निःस्वार्थ, त्यागपूर्ण और सेवा-भाव से भरे दुर्लभ भ्रातृ-प्रेम की ओर संकेत करते हैं; राम के साथ वन जाकर सुखों का त्याग करना इसका उदाहरण है।

त्वरित सुझाव: 'सो अनुराग' का अर्थ केवल स्नेह न लिखें; लक्ष्मण के वनगमन और सेवा का उदाहरण जोड़कर उसकी विशेषता स्पष्ट करें।

7(ख). कौन किससे उठने का आग्रह कर रहा है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वक्ता राम हैं और संबोधित व्यक्ति उनके मूर्च्छित छोटे भाई लक्ष्मण हैं।
- राम की व्याकुल पुकार के पीछे भाई के प्रति गहरा स्नेह और उसके वियोग का भय है।

चरण 1: वक्ता और संबोधित व्यक्ति पहचानना राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण से उठने का आग्रह कर रहे हैं। युद्ध में शक्ति लगने से लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े हैं और राम उनकी दशा देखकर अत्यंत व्याकुल हैं। "उठहु न सुनि मम बच विकलाई में राम की व्यथा और लक्ष्मण को चेतना में लौटता हुआ देखने की तीव्र इच्छा व्यक्त हुई है।

चरण 2: आग्रह का कारण समझाना राम लक्ष्मण के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर पा रहे हैं। वे लक्ष्मण के प्रेम का स्मरण करते हैं और कहते हैं कि यदि वन में भाई का वियोग होगा, यह पहले जानते तो पिता के वचन का पालन न करते। उनके अनुसार पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार फिर मिल सकते हैं, पर सहोदर भाई दोबारा नहीं मिलता। इसलिए वे लक्ष्मण से आँखें खोलने और उठने की करुण प्रार्थना करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष राम मूर्च्छित लक्ष्मण से उठने का आग्रह कर रहे हैं, क्योंकि वे अपने प्रिय भाई का वियोग सह नहीं सकते और उसे होश में लौटता देखना चाहते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन बातें स्पष्ट रखें: आग्रह करने वाले राम, सुनने वाले लक्ष्मण और आग्रह का कारण भ्रातृ-वियोग का भय।

7(ग). काव्यांश के आधार पर राम के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में गुण बताने के साथ काव्यांश से उसका प्रमाण जोड़ना चाहिए।
- इस प्रसंग में राम का स्नेहशील, संवेदनशील और करुणामय मानवीय स्वरूप प्रकट होता है।

चरण 1: स्नेह और संवेदनशीलता बताना राम अपने मूर्च्छित भाई को देखकर अत्यंत दुखी और व्याकुल हैं। वे लक्ष्मण के पुराने अनुराग को याद करके उन्हें बार-बार उठने के लिए कहते हैं। यह पुकार उनके गहरे भ्रातृ-स्नेह और कोमल हृदय का परिचय देती है। वे लक्ष्मण के साथ बिताए जीवन और उनके प्रेम को अत्यंत महत्त्व देते हैं।

चरण 2: संबंधों के प्रति दृष्टि समझाना राम कहते हैं कि वन में भाई का वियोग होगा, यह जानते तो पिता के वचन का पालन न करते। यह शोक की तीव्रता में निकला कथन है, जिससे उनके हृदय की पीड़ा व्यक्त होती है। पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार की अपेक्षा सहोदर भाई को दुर्लभ बताकर वे भौतिक वैभव से ऊपर आत्मीय संबंध को रखते हैं। इस प्रकार यहाँ उनका करुण, भावुक और मानवीय रूप सामने आता है।

चरण 3: निष्कर्ष राम अत्यंत स्नेहशील, संवेदनशील और करुणामय हैं। लक्ष्मण के प्रति उनकी व्याकुलता तथा भ्रातृ-प्रेम को सर्वोपरि मानना उनके उदात्त मानवीय व्यक्तित्व को प्रकट करता है।

त्वरित सुझाव: राम का हर गुण काव्यांश की किसी बात से जोड़ें; व्याकुल पुकार से संवेदनशीलता और सहोदर की दुर्लभता से भ्रातृ-प्रेम सिद्ध करें।

7(घ). राम ने भ्रातृ-प्रेम की तुलना में किनको हीन माना है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम के लिए सहोदर भाई का स्नेह अतुलनीय और पुनः प्राप्त न होने वाला संबंध है।
- "सुत वित नारि भवन परिवारा में तुलना के लिए आए सभी पदों का अर्थ स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: तुलना में आए संबंध और वस्तुएँ पहचानना राम ने भ्रातृ-प्रेम की तुलना में पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार को हीन अर्थात् कम महत्त्वपूर्ण माना है। काव्यांश में "सुत का अर्थ पुत्र, "वित का धन और "नारि का पत्नी है। "भवन तथा "परिवारा से घर और परिवार का बोध होता है। इस सूची में आए सभी पद प्रश्न के उत्तर का आवश्यक हिस्सा हैं।

चरण 2: इस तुलना का आशय स्पष्ट करना राम के अनुसार ये सब संसार में बार-बार प्राप्त हो सकते हैं और नष्ट होने पर फिर मिल सकते हैं, किंतु सहोदर भाई फिर नहीं मिलता। लक्ष्मण की मूर्च्छा से दुखी राम इस कथन द्वारा भाई के अद्वितीय महत्त्व को प्रकट करते हैं। यहाँ अन्य संबंधों के प्रति घृणा नहीं, बल्कि शोक के क्षण में भ्रातृ-स्नेह की सर्वोच्चता और लक्ष्मण के खो जाने की असह्य पीड़ा व्यक्त हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष राम ने पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार को भ्रातृ-प्रेम की तुलना में हीन माना है, क्योंकि ये फिर मिल सकते हैं, जबकि सहोदर भाई दोबारा प्राप्त नहीं होता।

त्वरित सुझाव: "सुत वित नारि भवन परिवारा के पाँचों पदों के अर्थ लिखें और अंत में सहोदर भाई की दुर्लभता को तुलना का कारण बनाएँ।

8(क). निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: सवेरा हुआ खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा शरद आया पुलों को पार करते हुए अपनी नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से चमकीले इशारों से बुलाते हुए। प्रातःकाल की तुलना किसे की गई है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी समान गुण के आधार पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है।
- प्रस्तुत काव्यांश में सवेरे और खरगोश की आँखों के बीच समानता उनके लाल रंग की है।

चरण 1: उपमा के दोनों पक्ष पहचानना काव्यांश में प्रातःकाल अर्थात् सवेरे की तुलना खरगोश की आँखों से की गई है। "खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा में सवेरा उपमेय और खरगोश की आँखें उपमान हैं। "जैसा शब्द तुलना को स्पष्ट करता है। उत्तर का आधार यही पंक्ति है; बाद की साइकिल और घंटी की कल्पना शरद के आगमन के चित्र से संबंधित है।

चरण 2: तुलना का कारण स्पष्ट करना सूर्योदय के समय आकाश में फैली लालिमा से सवेरा लाल दिखाई देता है। कवि को यह लाल रंग खरगोश की लाल आँखों जैसा लगता है। इस रंग-साम्य के कारण की गई तुलना सुबह के दृश्य को सजीव और आकर्षक बनाती है। छोटे और परिचित जीव की आँखों से तुलना करने पर पाठक सवेरे की लालिमा की स्पष्ट कल्पना कर पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रातःकाल की तुलना खरगोश की आँखों से की गई है, क्योंकि उगते सूर्य से लाल हुआ सवेरा खरगोश की लाल आँखों के समान दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: तुलना और उसका कारण अलग-अलग स्पष्ट करें: उपमान खरगोश की आँखें हैं और समान गुण लालिमा है।

8(ख). काव्यांश के बिंब को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब वह शब्दचित्र है जिससे दृश्य, ध्वनि अथवा गति का अनुभव सजीव हो उठता है।
- प्रस्तुत काव्यांश में लाल सवेरे और साइकिल चलाकर आते शरद के माध्यम से प्रकृति की ताजगी तथा चंचलता व्यक्त हुई है।

चरण 1: दृश्य बिंब स्पष्ट कीजिए 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' एक रंगप्रधान दृश्य बिंब है। खरगोश की लाल आँखों से सवेरे की लालिमा की तुलना करके कवि ने उगते दिन का कोमल, आकर्षक और उज्ज्वल रूप मूर्त कर दिया है। पाठक के सामने सुबह का लाल रंग प्रत्यक्ष हो उठता है।

चरण 2: गति और ध्वनि के बिंब पहचानिए शरद को पुल पार करते, नई चमकीली साइकिल तेज चलाते और चमकीले इशारों से बुलाते हुए दिखाने से गतिशील दृश्य बनता है। घंटी बजाने का उल्लेख श्रव्य बिंब रचता है। इन क्रियाओं से शरद का आगमन किसी उत्साही बालक के आने जैसा लगता है और वातावरण में गति, आनंद तथा नई उमंग भर जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस काव्यांश में लाल सवेरे का दृश्य बिंब, साइकिल चलाते शरद का गतिशील बिंब और घंटी की ध्वनि का श्रव्य बिंब मिलकर सजीव तथा उल्लासपूर्ण प्रकृति चित्र बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: लाल रंग को दृश्य, साइकिल की क्रिया को गति और घंटी को श्रव्य बिंब से जोड़कर प्रत्येक का प्रभाव बताइए।

8(ग). मानवीकरण के सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण में प्रकृति या अमानवीय वस्तु पर मनुष्य के गुणों और क्रियाओं का आरोप किया जाता है।
- प्रस्तुत काव्यांश में शरद ऋतु को साइकिल चलाते और इशारों से बुलाते व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

चरण 1: मानवीय क्रियाएँ पहचानिए शरद ऋतु का पुलों को पार करना, अपनी नई चमकीली साइकिल तेज चलाना, घंटी बजाना तथा इशारों से बुलाना मनुष्य की क्रियाएँ हैं। ऋतु स्वयं इन कार्यों को नहीं कर सकती। कवि ने उसे उत्साह से भरे बालक जैसा सजीव रूप देकर मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया है।

चरण 2: काव्य सौंदर्य समझाइए इस मानवीकरण से शरद का आगमन केवल मौसम बदलने की सूचना नहीं रह जाता; वह आनंद और चंचलता से भरा अनुभव बन जाता है। नई साइकिल उसकी नवीनता, तेज चाल उसकी स्फूर्ति और घंटी उसका उमंग भरा आह्वान व्यक्त करती है। इशारों से बुलाने के कारण प्रकृति मनुष्य की आत्मीय साथी जान पड़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष शरद का मानवीकरण प्रकृति को गतिशील, उल्लासपूर्ण और आत्मीय बनाता है। ऋतु का आगमन एक चंचल साथी के सजीव आगमन जैसा अनुभव होता है।

त्वरित सुझाव: मानवीकरण के उत्तर में पहले शरद की मानवीय क्रियाएँ लिखिए, फिर उनसे उत्पन्न गति, उल्लास और आत्मीयता स्पष्ट कीजिए।

अथवा

8(क). आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है बालक तो हई चाँद पे ललचाया है दर्पण उसे दे के कह रही है माँ देख आईने में चाँद उतर आया है। काव्यांश की भाषा की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ की रुबाई में माँ और बच्चे का घरेलू प्रसंग सहज बोलचाल की भाषा में व्यक्त हुआ है।
- भाषा की विशेषता बताते समय काव्यांश के शब्दों का उदाहरण तथा उनसे उत्पन्न प्रभाव दोनों बताने चाहिए।

चरण 1: लोकभाषा की सहजता बताइए काव्यांश की पहली विशेषता बोलचाल और लोकप्रयोगों से बनी सहज भाषा है। 'ठुनक', 'जिदयाया' और 'ललचाया' जैसे शब्द बालक की जिद तथा चाँद पाने की चाह को स्वाभाविक रूप में व्यक्त करते हैं। इन शब्दों से आँगन में मचलते बच्चे का परिचित घरेलू दृश्य जीवंत हो उठता है। भाषा में कृत्रिमता नहीं है।

चरण 2: मिश्रित शब्दावली और संवादधर्मिता बताइए दूसरी विशेषता हिंदी और उर्दू की मिली हुई आत्मीय हिंदुस्तानी भाषा है। 'आँगन', 'दर्पण' और 'माँ' जैसे शब्दों के साथ 'आईने' का प्रयोग सहज रूप में हुआ है। 'देख आईने में चाँद उतर आया है' माँ का सीधा संवाद है; इससे वात्सल्य और बच्चे को बहलाने की चतुराई प्रभावपूर्ण ढंग से सामने आती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा लोकप्रयोगों से युक्त सहज बोलचाल की भाषा तथा हिंदी और उर्दू के मेल से बनी संवादपूर्ण हिंदुस्तानी भाषा है। दोनों विशेषताएँ वात्सल्य के दृश्य को सजीव बनाती हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की हर विशेषता के साथ एक शब्द या संवाद उद्धृत कीजिए; केवल सरल और सुंदर लिखकर उत्तर समाप्त न कीजिए।

8(ख). यह काव्यांश किस छंद में लिखा गया है? उसकी विशेषता बताइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रुबाई उर्दू और फ़ारसी काव्यपरंपरा का चार पंक्तियों वाला स्वतंत्र छंद है।
- सामान्य रुबाई में पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियाँ तुकांत होती हैं; तीसरी पंक्ति अलग तुक की होती है।

चरण 1: छंद का नाम और रूप बताइए प्रस्तुत काव्यांश रुबाई छंद में लिखा गया है। इसकी रचना चार पंक्तियों या मिसरों में होती है और इन चारों में एक पूर्ण भाव व्यक्त किया जाता है। यहाँ चाँद के लिए मचलते बच्चे और उसे दर्पण दिखाकर बहलाती माँ का एक पूरा छोटा प्रसंग सामने आता है। यह अपने आप में अर्थपूर्ण रचना है।

चरण 2: तुक योजना स्पष्ट कीजिए इस रुबाई की पहली पंक्ति 'जिदयाया है', दूसरी 'ललचाया है' और चौथी 'उतर आया है' पर समाप्त होती है। इन तीनों के अंत में समान तुक तथा 'है' की आवृत्ति है। तीसरी पंक्ति 'माँ' पर समाप्त होकर अलग रहती है। इस प्रकार इसका तुकक्रम क-क-ख-क है। चार पंक्तियों में भाव की संक्षिप्त किंतु पूर्ण अभिव्यक्ति इसकी प्रमुख विशेषता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह रुबाई छंद है। इसमें चार पंक्तियाँ होती हैं और पहली, दूसरी तथा चौथी पंक्ति की तुक मिलती है; प्रस्तुत पद्य में माँ के वात्सल्य का भाव इसी संक्षिप्त रूप में पूर्ण हुआ है।

त्वरित सुझाव: पंक्तियों के अंतिम शब्द जिदयाया, ललचाया, माँ और आया मिलाकर रुबाई की क-क-ख-क तुक योजना पहचानिए।

8(ग). 'देख आईने में चाँद उतर आया है' कथन के सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस रुबाई में बच्चे की सहज जिद तथा उसे स्नेहपूर्वक बहलाने वाली माँ का वात्सल्य प्रमुख है।
- दर्पण में चाँद के प्रतिबिंब को चाँद का उतर आना कहना बालकल्पना के अनुकूल सुंदर अभिव्यक्ति है।

चरण 1: प्रसंग और कथन का अर्थ स्पष्ट कीजिए बालक चाँद पाने के लिए आँगन में ठुनकता और जिद करता है। माँ उसकी इच्छा सीधे पूरी नहीं कर सकती, इसलिए उसे दर्पण देकर कहती है कि देखो, चाँद आईने में उतर आया है। वास्तविक चाँद आकाश में है; दर्पण में उसका प्रतिबिंब दिखाई देता है। माँ इस प्रतिबिंब को बच्चे के लिए पास आया चाँद बना देती है।

चरण 2: कथन का भाव सौंदर्य समझाइए माँ बच्चे की जिद को डाँटकर दबाने के बजाय उसकी कल्पना के स्तर पर जाकर उसे बहलाती है। उसकी सूझबूझ और स्नेह इस छोटे संवाद में एक साथ व्यक्त होते हैं। दूर और अप्राप्य चाँद को आईने में उपलब्ध करा देने की कल्पना बच्चे की मासूम इच्छा के अनुकूल है। इससे मातृवात्सल्य, बालसुलभ कौतूहल तथा माँ की बालमन संबंधी समझ उभरती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का सौंदर्य चाँद के प्रतिबिंब द्वारा बालक को बहलाने की आत्मीय कल्पना में है। इसमें माँ का वात्सल्य, उसकी सूझबूझ और बच्चे की भोली आकांक्षा सुंदर ढंग से व्यक्त हुई हैं।

त्वरित सुझाव: चाँद के प्रतिबिंब का अर्थ स्पष्ट करके उत्तर को माँ के स्नेह, उसकी सूझबूझ और बच्चे की कल्पना से जोड़िए।

9(क). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। टिप्पणी कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता दुख के प्रदर्शन को सामाजिक संवेदना का नाम देने वाली मीडिया प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।
- करुणा का उद्देश्य पीड़ित की गरिमा और सहायता है; उसकी विवशता का मनोरंजक प्रदर्शन करुणा के भीतर छिपी क्रूरता को उजागर करता है।

चरण 1: करुणा के सार्वजनिक दावे को समझाइए दूरदर्शन पर एक अपाहिज व्यक्ति का साक्षात्कार सामाजिक उद्देश्य वाले कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ऊपर से लगता है कि कार्यक्रम उसकी पीड़ा से दर्शकों को परिचित कराकर उनमें संवेदना जगाना चाहता है। किंतु संचालक की रुचि उसके जीवन और आवश्यकताओं को समझने से अधिक दुख का प्रभावशाली दृश्य तैयार करने में है। इस प्रकार समाजसेवा का दावा व्यवहार से मेल नहीं खाता।

चरण 2: साक्षात्कार की क्रूरता स्पष्ट कीजिए संचालक व्यक्ति से उसके दुख के विषय में बार-बार ऐसे प्रश्न करता है जिनसे वह अपनी पीड़ा कैमरे के सामने व्यक्त करे। उसे रोने की स्थिति तक पहुँचाने और उसके चेहरे तथा आँखों को कैमरे में प्रमुखता से दिखाने का प्रयास होता है। उसकी झिझक, असुविधा और मानवीय गरिमा का सम्मान नहीं किया जाता। पीड़ित व्यक्ति स्वतंत्र मनुष्य के स्थान पर कार्यक्रम को करुण बनाने का साधन बन जाता है।

चरण 3: कविता के व्यंग्य का आशय बताइए दर्शकों में भावुकता पैदा करके कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना यहाँ प्रमुख लक्ष्य बन जाता है। पीड़ा दूर करने के बजाय उसका प्रदर्शन किया जाता है और संचालक समय की सीमा में मनचाही प्रतिक्रिया चाहता है। इसी विरोधाभास से कविता का तीखा व्यंग्य निकलता है: करुणा का बाहरी आवरण पीड़ित को दोबारा यातना देने वाली संवेदनहीन प्रक्रिया को ढकता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है, क्योंकि सामाजिक संवेदना के नाम पर अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा का तमाशा बनाया जाता है। उसकी सहायता और गरिमा से अधिक महत्त्व कैमरे पर दुख तथा आँसू दिखाने को दिया जाता है।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी में समाजसेवा के दावे और बार-बार दुख उगलवाने वाले व्यवहार को साथ रखिए; इसी विरोध से कविता का व्यंग्य स्पष्ट होगा।

9(ख). कविता के उपमानों की चर्चा करते हुए प्रतिपादित कीजिए कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्र है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता में उषाकाल के बदलते रंगों को घरेलू वस्तुओं के उपमानों से मूर्त किया गया है।
- गतिशील चित्र में एक ही दृश्य स्थिर नहीं रहता; प्रकाश बढ़ने के साथ उसका रंग और रूप लगातार बदलते हैं।

चरण 1: ग्रामीण जीवन से लिए गए उपमान प्रातःकाल का गहरा नीला आकाश नीले शंख जैसा है। फिर वह राख से लीपे हुए ऐसे चौके जैसा लगता है जो अभी गीला है। राख, चौका और उसका गीलापन ग्रामीण घर की सुबह का परिचित अनुभव जगाते हैं। आकाश की लाली के लिए काली सिल पर थोड़ा लाल केसर घिसे होने का उपमान आता है। इन वस्तुओं के माध्यम से दूर का आकाश घर-आँगन के निकट और सहज अनुभव का विषय बन जाता है।

चरण 2: रंगों और प्रकाश में क्रमिक परिवर्तन आकाश कभी ऐसी स्लेट जैसा दिखाई देता है जिस पर लाल खड़िया चाक मल दिया गया हो। इसके बाद नीले जल में किसी की गोरी झिलमिलाती देह का बिंब आता है। नीलेपन, राख जैसे धूसर रंग और लालिमा से उज्ज्वल झिलमिलाहट तक पहुँचता यह क्रम अँधेरे के घटने तथा प्रकाश के बढ़ने को दिखाता है। कवि केवल वस्तुओं की सूची नहीं देता, बल्कि बदलती भोर के अलग-अलग क्षण पकड़ता है।

चरण 3: सूर्योदय से चित्र की पूर्णता सूर्योदय होने पर उषा का जादू टूट जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि वर्णन रात और दिन के बीच की परिवर्तनशील अवस्था का है। ग्रामीण घरेलू उपमान दृश्य को आत्मीय बनाते हैं और लगातार बदलते बिंब उसे गतिशील बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार गीले चौके, सिल, केसर और स्लेट जैसे परिचित उपमानों तथा सूर्योदय तक बदलते प्रकाश के कारण 'उषा' गाँव की सुबह का सजीव और गतिशील चित्र है।

त्वरित सुझाव: उपमान गिनाने के बाद उनके रंगों का बदलता क्रम और अंतिम सूर्योदय अवश्य जोड़ें; इसी से गतिशीलता सिद्ध होगी।

9(ग). 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता समय के तीव्र प्रवाह और प्रियजनों से मिलने की आकांक्षा को व्यक्त करती है।
- घर पर किसी की प्रतीक्षा होने का भाव गति और उत्साह बढ़ाता है; अपनत्व का अभाव व्यक्ति को शिथिल और व्याकुल करता है।

चरण 1: समय-बोध और घर लौटने की व्यग्रता कविता में दिन का तेजी से ढलना जीवन के समय के निरंतर बीतने का बोध कराता है। पथिक सोचता है कि कहीं रास्ते में रात न हो जाए। मंजिल निकट जानकर दिन भर की थकान के बावजूद वह जल्दी-जल्दी चलने लगता है। इस चित्र से लक्ष्य तक पहुँचने की आकांक्षा और समय रहते प्रिय स्थान पर लौटने की बेचैनी व्यक्त होती है।

चरण 2: पारिवारिक स्नेह से मिलने वाली प्रेरणा चिड़ियों को लगता है कि घोंसलों में बच्चे उनकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। बच्चे माता-पिता को आते देखने के लिए उत्सुक हैं। यह विचार चिड़ियों के पंखों में चंचलता भर देता है। प्रियजनों की प्रतीक्षा और उनसे मिलने की आशा थकान पर विजय पाने तथा गति बढ़ाने की शक्ति देती है। इस प्रसंग में घर केवल स्थान नहीं, स्नेह और आत्मीयता का केंद्र है।

चरण 3: कवि की अकेलेपन से उत्पन्न व्याकुलता इसके विपरीत कवि के मन में प्रश्न उठता है कि उससे मिलने को कौन व्याकुल है और वह किसके लिए शीघ्र लौटे। यह भाव उसके कदम शिथिल कर देता है और हृदय को विह्वल करता है। पथिक और पक्षियों के उत्साह के सामने कवि का अकेलापन अधिक स्पष्ट हो जाता है। बार-बार दिन ढलने का उल्लेख समय की गति के साथ इस भावात्मक अंतर को भी गहरा करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता का प्रतिपाद्य है कि बीतता समय मनुष्य में लौटने की व्यग्रता जगाता है, पर जीवन को गति और अर्थ आत्मीय संबंध देते हैं; उनकी कमी अकेलेपन तथा व्याकुलता का कारण बनती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पथिक, बच्चों के पास लौटती चिड़ियाँ और अकेले कवि की मनःस्थिति को जोड़ें; केवल सूर्यास्त का वर्णन पर्याप्त नहीं है।

10(क). नीचे दिए हुए गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया, पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ। उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले उसका प्रयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन क्या जाने। वह 'देहातिन' कौन थी? उसने अपने नाम का उपयोग न करने की प्रार्थना लेखिका से क्यों की? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश की 'देहातिन' की पहचान उसके नाम और लेखिका के घर काम करने आने के प्रसंग से होती है।
- लक्ष्मी नाम समृद्धि का संकेत देता है, जबकि पात्र का वास्तविक जीवन निर्धनता से ग्रस्त है।

चरण 1: देहातिन की पहचान 'देहातिन' भक्तिन थी, जो लेखिका महादेवी वर्मा के यहाँ नौकरी की खोज में आई थी। उसका वास्तविक नाम लछमिन था, जो लक्ष्मी का लोकप्रचलित रूप है। लेखिका गद्यांश में इसी नाम को लक्ष्मी और समृद्धि के संबंध से जोड़ती हैं। भक्तिन ने नौकरी माँगते समय अपने जीवन-वृत्त के साथ अपना असली नाम भी ईमानदारी से बताया था।

चरण 2: नाम छिपाने का कारण लक्ष्मी धन और समृद्धि की प्रतीक हैं, पर भक्तिन के जीवन में गरीबी तथा अभाव थे। इसलिए उसके समृद्धि-सूचक नाम और वास्तविक परिस्थिति में विरोधाभास था। वह इस बेमेल नाम से पुकारा जाना नहीं चाहती थी। इसी कारण उसने लेखिका से प्रार्थना की कि वे उसका वास्तविक नाम प्रयोग न करें। गद्यांश का कथन कि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को नहीं बताती, इस कारण को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष वह देहातिन भक्तिन अर्थात् लछमिन थी। अपने लक्ष्मी-सूचक नाम और अभावपूर्ण जीवन के विरोधाभास के कारण उसने लेखिका से उस नाम का उपयोग न करने की प्रार्थना की।

त्वरित सुझाव: पहले पात्र का नाम लिखें, फिर लक्ष्मी के समृद्धि-सूचक अर्थ और भक्तिन की निर्धनता का स्पष्ट संबंध बताएं।

10(ख). 'मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है' – कैसे? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'दुर्वह' का अर्थ है जिसे वहन करना कठिन हो; यहाँ यह नाम से जुड़ी महानता की अपेक्षा का संकेत है।
- लेखिका अपने नाम और अपने व्यक्तित्व की तुलना में विनम्रता तथा आत्मपरिहास का प्रयोग करती हैं।

चरण 1: नाम की विशालता का अर्थ लेखिका का नाम महादेवी है। इस नाम का अर्थ महान देवी है, इसलिए इससे असाधारण महानता, ऊँचे गुण और देवी जैसी गरिमा का बोध होता है। 'विशालता' नाम के अक्षरों की संख्या या आकार के लिए नहीं, उसके अर्थ की ऊँचाई के लिए प्रयुक्त हुई है। नाम अपने धारक के लिए बहुत बड़ी आदर्शात्मक अपेक्षा प्रस्तुत करता है।

चरण 2: लेखिका को यह दुर्वह क्यों लगता है लेखिका विनम्रतापूर्वक स्वयं को साधारण मनुष्य मानती हैं। वे अपने में ऐसी असाधारण महानता का दावा नहीं करतीं जो 'महादेवी' नाम को पूरी तरह सार्थक करे। इसलिए नाम की गरिमा को निभाना उन्हें कठिन भार जैसा लगता है। यह कथन आत्मपरिहास भी है और आगे भक्तिन के समृद्धि-सूचक नाम तथा निर्धन जीवन के विरोधाभास की भूमिका भी बनाता है। इससे लेखिका की अहंकाररहित दृष्टि प्रकट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष महादेवी नाम महान देवी होने की ऊँची अपेक्षा जगाता है; लेखिका विनम्रतावश स्वयं को उस आदर्श के अनुरूप नहीं मानतीं। इसलिए वे नाम की इस विशालता को अपने लिए दुर्वह कहती हैं।

त्वरित सुझाव: 'दुर्वह' को शारीरिक वजन न समझें; महादेवी नाम के उच्च अर्थ और लेखिका की विनम्र आत्मदृष्टि से उसका आशय स्पष्ट करें।

10(ग). आशय स्पष्ट कीजिए – लक्ष्मी की समृद्धि कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लक्ष्मी धन-संपदा की प्रतीक हैं; गद्यांश में उनका उल्लेख भक्तिन के वास्तविक नाम से जुड़ा है।
- कपाल की रेखाएँ लाक्षणिक रूप में भाग्य का संकेत करती हैं; कथन नाम और जीवन की वास्तविकता का विरोधाभास दिखाता है।

चरण 1: शब्दों का लाक्षणिक अर्थ 'लक्ष्मी की समृद्धि' का आशय धन-संपदा और सुख-सुविधा से है। 'कपाल की कुंचित रेखाएँ' भक्तिन के माथे की सिकुड़ी हुई रेखाओं का उल्लेख करते हुए उसके भाग्य और संघर्षपूर्ण जीवन की ओर संकेत करती हैं। समृद्धि का इन रेखाओं में न बँध पाना कोई वास्तविक बँधने की क्रिया नहीं, बल्कि उसके जीवन में धन-संपन्नता न आ पाने की व्यंजना है।

चरण 2: भक्तिन के जीवन से संबंध भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात् लक्ष्मी था। नाम सुनकर समृद्धि का भाव आता है, लेकिन उसका जीवन अभाव और कठिनाइयों से भरा था। आजीविका के लिए उसे नौकरी खोजनी पड़ी। इस प्रकार नाम में लक्ष्मी होने पर भी लक्ष्मी की संपन्नता उसके भाग्य में नहीं थी। लेखिका इस विरोधाभास के माध्यम से बताती हैं कि किसी व्यक्ति का शुभ या भव्य नाम उसकी वास्तविक जीवन-दशा की गारंटी नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि लक्ष्मी-सूचक नाम होने के बावजूद भक्तिन को धन-संपदा नहीं मिली; उसके भाग्य और जीवन में समृद्धि के स्थान पर अभाव तथा संघर्ष रहे।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय लक्ष्मी को समृद्धि और कपाल की रेखाओं को भाग्य से जोड़ें, फिर भक्तिन के नाम-जीवन का विरोधाभास बताएं।

10(घ). लेखिका और उसके घर में काम करने वाली भक्तिन के वास्तविक नामों में ऐसा क्या विरोधाभास था जिसे लेकर दोनों को जीना पड़ रहा था? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाम का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति के वास्तविक जीवन का प्रमाण नहीं होता। इस प्रसंग में महादेवी वर्मा नाम और जीवन की इसी असंगति को स्पष्ट करती हैं।
- लेखिका अपने नाम की विशालता और भक्तिन के वास्तविक नाम में निहित समृद्धि की तुलना दोनों के जीवन की वास्तविकता से करती हैं।

चरण 1: लेखिका के नाम का आशय समझिए लेखिका का वास्तविक नाम महादेवी था। इसका अर्थ महान देवी है। नाम में असाधारण महानता और दिव्यता का भाव है, पर लेखिका स्वयं को सामान्य मानवीय सीमाओं वाला मनुष्य मानती हैं। इसलिए उन्हें अपने नाम की विशालता अपने लिए दुर्वह, अर्थात् उठाने में कठिन बोझ जैसी लगती है। यह उनकी विनम्र और आत्मपरिहासपूर्ण अभिव्यक्ति है।

चरण 2: भक्तिन के नाम से जीवन का अंतर बताइए भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन था, जो लक्ष्मी का लोकप्रचलित रूप है। लक्ष्मी धन और समृद्धि की देवी मानी जाती हैं, किंतु भक्तिन का जीवन निर्धनता, अभाव और संघर्ष में बीता। उसके नाम में समृद्धि थी, पर भाग्य में उसका अभाव था। इसीलिए वह अपना वास्तविक नाम बताना और उससे पुकारा जाना पसंद नहीं करती थी।

चरण 3: निष्कर्ष महादेवी नाम में निहित महानता लेखिका को भारी लगती थी, जबकि लछमिन नाम में निहित धन-समृद्धि भक्तिन के जीवन में नहीं थी। दोनों को अपने नाम के अर्थ और जीवन की वास्तविकता के विरोध के साथ जीना पड़ रहा था।

त्वरित सुझाव: दोनों नामों का अर्थ अलग-अलग लिखकर उन्हें जीवन की वास्तविकता से जोड़ें; केवल भक्तिन की गरीबी बताने से उत्तर अधूरा रहेगा।

अथवा

10(क). इस चिलकती धूप में इतना-इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन – धूप, वर्षा, आँधी, लू – अपने आपमें सत्य नहीं हैं? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गांधी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ, तब-तब हूक उठती है – हाय, वह अवधूत आज कहाँ है! अवधूत किसे कहते हैं? शिरीष को अवधूत मानना कहाँ तक तर्कसंगत है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत वह विरक्त और स्वच्छंद साधक है जो सांसारिक मोह, सुख-दुःख और बाहरी परिस्थितियों के प्रभाव से ऊपर उठकर अपने सहज स्वभाव में स्थित रहता है।
- प्रकृति के किसी रूप को मानवीय गुण देना उसके आचरण और स्वभाव की समानता के आधार पर सार्थक होता है। यहाँ शिरीष की मस्ती और सहनशक्ति महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 1: अवधूत की विशेषता स्पष्ट कीजिए अवधूत संसार में रहते हुए भी लोभ, मोह और अनुकूल-प्रतिकूल स्थितियों का दास नहीं बनता। उसका मन स्वतंत्र और निर्लिप्त रहता है। वह कठिनाई से टूटने या सुख से चिपक जाने के स्थान पर अपनी आंतरिक शक्ति और सहज आनंद को बनाए रखता है। यहाँ अवधूत का आशय केवल किसी विशेष वेश वाले साधु से नहीं, बल्कि ऐसे मुक्त स्वभाव से है।

चरण 2: शिरीष के व्यवहार से समानता स्थापित कीजिए प्रचंड धूप, आँधी और लू के बीच भी शिरीष सरस और पुष्पित बना रहता है। वह वायुमंडल से रस खींचकर जीवित रहता और कोमल फूल देता है। प्रतिकूल मौसम उसकी मस्ती और जीवनशक्ति को नष्ट नहीं कर पाता। बाहरी कठोरता सहते हुए भीतर की कोमलता बचाए रखने के कारण उसका स्वभाव अवधूत जैसा प्रतीत होता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष को अवधूत मानना तर्कसंगत है, क्योंकि वह कठिन परिस्थितियों में भी निर्लिप्त, मस्त, सरस और जीवन से भरपूर रहता है। उसमें अवधूत की स्वतंत्रता तथा प्रतिकूलता से अप्रभावित रहने की शक्ति दिखाई देती है।

त्वरित सुझाव: पहले अवधूत का अर्थ दें, फिर धूप और लू में शिरीष की सरसता को उस अर्थ का प्रमाण बनाएं।

10(ख). किन आधारों पर लेखक महात्मा गांधी और शिरीष को समान धरातल पर पाता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में शिरीष और महात्मा गांधी की तुलना प्रतिकूलता के बीच अडिग रहने तथा कोमलता बचाए रखने के आधार पर की गई है।
- यहाँ कोमलता करुणा और संवेदनशीलता का, जबकि कठोरता दृढ़ता और सहनशक्ति का बोध कराती है; कठोरता का अर्थ क्रूरता नहीं है।

चरण 1: प्रतिकूलता के बीच स्थिरता पहचानिए धूप, वर्षा, आँधी और लू शिरीष को विचलित नहीं कर पातीं; वह अपनी सरसता बनाए रखता है। इसी प्रकार देश में मार-काट, आगजनी और लूट-पाट के समय गांधी अपने मानवीय आदर्शों पर दृढ़ रहे। हिंसा के वातावरण में उन्होंने अहिंसा और मानव-प्रेम का मार्ग नहीं छोड़ा। दोनों बाहरी संकट का सामना अपनी आंतरिक शक्ति से करते हैं।

चरण 2: कोमलता और दृढ़ता का मेल समझाइए शिरीष के फूल कोमल हैं, किंतु उसका जीवन कठिन मौसम सहने वाला है। गांधी भी पीड़ित मनुष्यों के प्रति करुणामय थे, पर सत्य और अहिंसा के प्रति अपने संकल्प में अडिग थे। लेखक के अनुसार दोनों वायुमंडल से रस खींचते हैं, अर्थात् अपने परिवेश से जीवनशक्ति ग्रहण करते हुए उसकी विषमताओं के बीच जीवित और सक्रिय रहते हैं। यही अवधूत-जैसी निर्लिप्तता उन्हें जोड़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष और गांधी दोनों विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर, भीतर से कोमल और संकल्प में दृढ़ रहते हैं। उनकी सरसता, सहनशीलता तथा अवधूत जैसी स्वतंत्र वृत्ति उन्हें समान धरातल पर लाती है।

त्वरित सुझाव: तुलना में प्रत्येक आधार के दोनों पक्ष लिखें: शिरीष की मौसम-सहनशीलता के साथ गांधी की हिंसा के बीच अहिंसक दृढ़ता जोड़ें।

10(ग). देश के ऊपर से गुजर रहे बवंडर का क्या स्वरूप है? इससे कैसे जूझा जा सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का बवंडर सामाजिक और मानवीय संकट का रूपक है। उसका स्वरूप पहचानने के लिए मार-काट, अग्निदाह और लूट-पाट जैसे शब्द निर्णायक हैं।
- लेखक गांधी और शिरीष का उदाहरण देकर प्रतिकूलता में मानवीय संवेदना तथा आंतरिक दृढ़ता बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

चरण 1: बवंडर का स्वरूप स्पष्ट कीजिए देश के ऊपर से गुजरने वाला बवंडर हिंसा, सांप्रदायिक विद्वेष, आगजनी, लूट-पाट और रक्तपात का है। इसने मनुष्यों के जीवन, सुरक्षा और आपसी विश्वास को नष्ट किया। गद्यांश में आया खून-खच्चर का उल्लेख इसी व्यापक अमानवीयता को व्यक्त करता है। इसे केवल मौसम की आँधी समझना गलत होगा; यह समाज को झकझोरने वाली विनाशकारी घटनाओं का संकेत है।

चरण 2: जूझने का मार्ग बताइए ऐसे संकट से गांधी की तरह सत्य, अहिंसा, प्रेम और करुणा पर अडिग रहकर जूझा जा सकता है। हिंसा के उत्तर में हिंसा बढ़ाने के बजाय मनुष्यता और सद्भाव बचाना आवश्यक है। शिरीष की तरह बाहरी कठोरता सहते हुए भीतर की सरसता कायम रखनी चाहिए। यहाँ स्थिर रहने का अर्थ पीड़ा से उदासीन होना नहीं, बल्कि संकट में भी अपने मानवीय आदर्शों से न डिगना है।

चरण 3: निष्कर्ष यह बवंडर मार-काट, आगजनी, लूट और रक्तपात का है। उससे सत्य, अहिंसा, सद्भाव, धैर्य और दृढ़ संकल्प के सहारे जूझकर मानवीय कोमलता की रक्षा की जा सकती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले भाग में गद्यांश के हिंसासूचक शब्द लें और दूसरे में गांधी की अहिंसा तथा शिरीष की अडिग सरसता से उपाय समझाएं।

10(घ). आशय स्पष्ट कीजिए – मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हूक उठती है – हाय, वह अवधूत आज कहाँ है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय कथन के प्रतीक और उससे जुड़ी भावना दोनों समझाने चाहिए। यहाँ अवधूत महात्मा गांधी के लिए प्रयुक्त हुआ है।
- हूक उठना किसी प्रिय और मूल्यवान व्यक्तित्व के अभाव से उपजने वाली तीव्र वेदना को व्यक्त करता है।

चरण 1: शिरीष से गांधी का स्मरण जुड़ने का कारण बताइए लेखक जब कठिन धूप और लू के बीच शिरीष को हरा-भरा और फूलों से युक्त देखता है, तो उसे गांधी की याद आती है। गांधी भी हिंसा, घृणा और विनाश के बीच अपनी करुणा, अहिंसा और अटल संकल्प बनाए रख सके थे। जैसे शिरीष में कोमल फूल और कठोर परिस्थितियों को सहने की शक्ति साथ हैं, वैसे ही गांधी में संवेदनशील हृदय और दृढ़ चरित्र का मेल था।

चरण 2: कथन की वेदना स्पष्ट कीजिए गांधी के न रहने से लेखक को ऐसे निर्लिप्त, साहसी और मानवतावादी मार्गदर्शक का अभाव खटकता है। शिरीष उसकी स्मृति ताजा कर देता है और मन में पीड़ा उठती है। अवधूत कहाँ है का प्रश्न किसी स्थान की जानकारी नहीं माँगता; यह गांधी की अनुपस्थिति और उनके जैसे जीवन-मूल्यों की आवश्यकता से उत्पन्न व्यथा की अभिव्यक्ति है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि शिरीष की अडिग सरसता देखकर लेखक को गांधी का करुणामय और दृढ़ व्यक्तित्व याद आता है। गांधी के अभाव का दुख उसे भीतर तक व्यथित करता है और उनके जैसे अवधूत की कमी तीव्रता से अनुभव होती है।

त्वरित सुझाव: आशय में अवधूत की पहचान गांधी के रूप में करें और हूक को उनके अभाव की वेदना से जोड़ें; केवल शब्दार्थ लिखकर न रुकें।

11(क). किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए: नमक की पुड़िया के संबंध में सफ़िया के मन में क्या द्वंद्व था? उसका क्या समाधान निकला? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी नमक में नमक की पुड़िया जन्मभूमि की स्मृति, आत्मीयता और विभाजन के पार जीवित मानवीय संबंधों का प्रतीक बनती है।
- सफ़िया की दुविधा को समझने के लिए सिख बीबी से किए वादे, नमक लाने पर लगी पाबंदी और चोरी-छिपे वस्तु लाने की नैतिक असहजता को साथ देखना चाहिए।

चरण 1: द्वंद्व की पृष्ठभूमि समझाइए सिख बीबी ने सफ़िया से लाहौर का नमक लाने को कहा था। इस छोटी-सी माँग में उनके छूटे हुए वतन की याद और गहरा लगाव था। सफ़िया नमक लाकर उनकी इच्छा पूरी करना चाहती थी। किंतु उसे पता चला कि पाकिस्तान से भारत नमक ले जाना प्रतिबंधित है। इस प्रकार एक ओर आत्मीय वचन और मानवीय भावना थी, तो दूसरी ओर सीमा के नियम और पकड़े जाने की आशंका थी।

चरण 2: छिपाने और सच बताने की दुविधा स्पष्ट कीजिए सफ़िया ने पहले नमक की पुड़िया कीनुओं की टोकरी में छिपाकर ले जाने का उपाय सोचा। फिर उसके मन में प्रश्न उठा कि प्रेम की इतनी साधारण और निर्दोष भेंट चोरी से क्यों ले जाई जाए। छिपाने पर नमक बच सकता था, लेकिन उस तरीके से उसे नैतिक संकोच होता था। वह निर्णय नहीं कर पा रही थी कि नमक छिपाए रखे या कस्टम अधिकारी को सच्चाई बताकर अनुमति माँगे।

चरण 3: निर्णय और उसका परिणाम बताइए अंततः सफ़िया ने चोरी-छिपे ले जाने के बजाय कस्टम अधिकारी को नमक की पुड़िया और उसके भावनात्मक उद्देश्य के विषय में बता दिया। अधिकारी ने उसकी बात की मानवीय महत्ता समझी और नमक ले जाने में सहायता की। इस तरह सत्य कहने तथा एक मनुष्य की जन्मभूमि से जुड़ी संवेदना को सामने रखने पर उसकी दुविधा का समाधान निकला।

चरण 4: निष्कर्ष सफ़िया नमक को छिपाकर ले जाने और नियम के सामने उसकी सच्चाई स्वीकार करने के बीच उलझी थी। उसने अधिकारी को सच बताने का रास्ता चुना; मानवीय संवेदना के कारण नमक ले जाने की बाधा दूर हो गई।

त्वरित सुझाव: द्वंद्व के दोनों पक्ष स्पष्ट लिखें और समाधान में सफ़िया का सच बताने का निर्णय अवश्य जोड़ें; केवल नमक पर पाबंदी का उल्लेख पर्याप्त नहीं है।

11(ख). चार्ली चैपलिन का भारतीयकरण किसे कहा गया है और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली की कला में साधारण मनुष्य की असहायता, संघर्ष और अपने ऊपर हँस सकने की क्षमता का मेल है।
- भारतीयकरण का अर्थ चार्ली की अभिनय-दृष्टि को भारतीय पात्रों, सामाजिक स्थितियों और संवेदनाओं में ढालना है।

चरण 1: भारतीयकरण करने वाले कलाकार को पहचानिए पाठ में राजकपूर द्वारा चार्ली चैपलिन की कला को भारतीय सिनेमा में अपनाने को चार्ली का भारतीयकरण कहा गया है। राजकपूर ने अपनी फिल्म 'आवारा' में और उसके बाद 'श्री 420' में ऐसे नायक को प्रस्तुत किया जो साधारण, अभावग्रस्त और परिस्थितियों से संघर्ष करने वाला मनुष्य है। उसकी भंगिमाएँ और हास्य चार्ली की याद दिलाते हैं, पर उसके संघर्ष और अनुभव भारतीय समाज से जुड़े हैं। इस प्रकार विदेशी कलाकार की शैली भारतीय जीवन की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी।

चरण 2: इस प्रयोग का महत्त्व समझाइए राजकपूर का नायक अपनी कमजोरियों और बेबसी को छिपाकर केवल महान या विजयी दिखाई देने का आग्रह नहीं करता। वह अपने ऊपर हँस भी सकता है और दर्शकों को अपने साथ हँसा भी सकता है। उसके हास्य के पीछे गरीबी, अपमान और अकेलेपन की करुणा रहती है। पाठ के अनुसार भारतीय कला में सामान्यतः दूसरों पर हँसने की प्रवृत्ति मिलती थी; अपने ऊपर हँसने का यह साहस विशेष था। राजकपूर ने चार्ली की इसी मानवीय दृष्टि को भारतीय दर्शकों के निकट पहुँचाया। इसलिए

इसे केवल वेशभूषा या चाल की नकल समझना अधूरा होगा।

चरण 3: निष्कर्ष राजकपूर ने 'आवारा' और 'श्री 420' में चार्ली की आत्मपरिहास तथा करुणा-मिश्रित हास्य की कला को भारतीय जीवन में ढाला। इसी कारण उनके इस प्रयोग को चार्ली चैपलिन का भारतीयकरण कहा गया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में राजकपूर, 'आवारा', 'श्री 420' और अपने ऊपर हँसने की क्षमता को जोड़िए; केवल पोशाक की समानता लिखकर न रुकिए।

11(ग). पहलवान लुट्टन के सुखचैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन के सुखचैन भरे दिनों का आधार कुश्ती में मिली प्रतिष्ठा और राजा का संरक्षण था।
- इस प्रसंग में उसके भोजन, सम्मान, पारिवारिक जीवन और भविष्य की आशा से जुड़े तथ्य महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 1: राजकीय संरक्षण से मिली सुविधाएँ बताइए चाँद सिंह को पराजित करने के बाद लुट्टन को राजा श्यामानंद का संरक्षण मिला और वह राजदरबार का पहलवान बन गया। उसके जीवन की आर्थिक कठिनाइयाँ दूर हो गईं। उसे राजकीय व्यवस्था से भरपूर भोजन मिलता था और अपने शरीर तथा पहलवानी को सँवारने का अवसर प्राप्त था। अब उसे रोजी-रोटी की चिंता नहीं सताती थी। उसकी शक्ति और विजय के कारण लोगों में उसका आदर था तथा उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। वह मेलों में अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व और पहलवानी के कारण आकर्षण का केंद्र बनता था।

चरण 2: निश्चिंत जीवन और पुत्रों से जुड़ी आशा स्पष्ट कीजिए राजदरबार का आश्रय पाकर लुट्टन ने लगभग पंद्रह वर्ष सुखचैन से बिताए। वह खाता-पीता, कुश्ती का अभ्यास करता और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करता था। उसके दोनों पुत्र भी बड़े होकर पहलवानी सीखने लगे थे। उन्हें देखकर उसे अपनी कला और प्रतिष्ठा के आगे बढ़ने की आशा होती थी। राजा की कृपा से उनके पालन-पोषण की व्यवस्था भी होती थी। इस प्रकार उसके सुख में शारीरिक सुविधा के साथ सामाजिक सम्मान और पुत्रों के भविष्य का भरोसा सम्मिलित था। यह अवस्था बाद में राजाश्रय छिन जाने पर आए अभावपूर्ण जीवन से बिल्कुल भिन्न थी।

चरण 3: निष्कर्ष राजकीय संरक्षण, पर्याप्त भोजन, कुश्ती में यश और पुत्रों को पहलवान बनाने की आशा ने लुट्टन के लगभग पंद्रह वर्षों को सुखचैन से भर दिया था। उस समय वह जीविका की चिंता से मुक्त और अपनी प्रतिष्ठा के प्रति आश्वस्त था।

त्वरित सुझाव: सुखचैन के दिनों का वर्णन करते समय राजाश्रय, भोजन, प्रसिद्धि और दोनों पुत्रों का उल्लेख कीजिए; बाद की महामारी का विवरण इसमें न मिलाइए।

11(घ). 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर बताइए कि जीजी ने इंदरसेना पर पानी फेंके जाने को किस प्रकार सही ठहराया? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी का तर्क लोकविश्वास के साथ त्याग, दान और भविष्य के लाभ के लिए बीज बचाने की भावना पर आधारित है।
- लेखक पानी के उपयोग को तर्क से देखता है, जबकि जीजी उसी क्रिया में सामूहिक आशा और उदारता का मूल्य देखती हैं।

चरण 1: पानी देने के पक्ष में जीजी का तर्क समझाइए लेखक को अकाल के समय इंदरसेना पर पानी फेंकना पानी की बरबादी लगता था। जीजी ने समझाया कि कुछ पाने के लिए पहले कुछ देना पड़ता है। जिस वस्तु की कमी हो और जिसकी बहुत आवश्यकता हो, उसी का दान करना सच्चा त्याग है। पानी की भारी कमी के समय थोड़ा पानी देना इसलिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। जीजी के विश्वास के अनुसार इंद्र को पानी का अर्घ्य देने से वर्षा की कृपा प्राप्त होगी। इस प्रकार वह इस क्रिया को व्यर्थ खर्च के स्थान पर वर्षा पाने के लिए किया गया त्याग मानती थीं।

चरण 2: किसान के उदाहरण से बात स्पष्ट कीजिए जीजी ने किसान के बीज बोने का उदाहरण दिया। किसान अपनी अच्छी फसल में से कुछ दाने बचाकर उन्हें खेत में बिखेर देता है। देखने में यह उपयोगी अन्न को मिट्टी में डालना लगता है, किंतु वही बीज आगे चलकर बहुत अधिक अन्न देता है। यदि किसान सारा अनाज स्वयं खा ले और बोने के लिए कुछ न छोड़े, तो नई फसल कहाँ से आएगी? इसी प्रकार जीजी ने इंदरसेना पर फेंके गए पानी को वर्षा का बीज माना। उनके अनुसार थोड़ा पानी देने से बादलों से बहुत सारा पानी मिलने की आशा की जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी ने दुर्लभ वस्तु के दान को सच्चा त्याग और किसान के बीज बोने को भविष्य की प्राप्ति का आधार बताया। इन्हीं तर्कों से उन्होंने इंदरसेना पर पानी फेंकने को वर्षा पाने के लिए किया गया सार्थक अर्पण ठहराया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दो तर्क अवश्य जोड़िए: कमी वाली वस्तु का दान ही सच्चा त्याग है और थोड़ा बीज बोने से बड़ी फसल मिलती है। इन्हें जीजी के विश्वास के रूप में लिखिए।

11(ङ). बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? 'बाज़ार दर्शन पाठ' के आधार पर उत्तर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का जादू वस्तुओं की आकर्षक सजावट से उत्पन्न वह मोह है जो आवश्यकता और इच्छा का अंतर भुला देता है।
- पाठ आवश्यकता की पहचान और मन के संयम को बाज़ार के आकर्षण से बचने का उपाय बताता है।

चरण 1: बाज़ार के जादू का अर्थ बताइए बाज़ार में सजी हुई तरह-तरह की सुंदर वस्तुएँ मनुष्य की आँखों को आकर्षित करती हैं। उन्हें देखकर वह अपनी वास्तविक आवश्यकता पर विचार किए बिना सब कुछ पाने की इच्छा करने लगता है। वस्तुओं का यही सम्मोहन बाज़ार का जादू है। जब जेब भरी हो और मन को यह स्पष्ट न हो कि उसे क्या चाहिए, तब यह जादू अधिक प्रभाव डालता है। इसलिए इसका संबंध केवल पैसे से नहीं, मन की अनिश्चितता और इच्छाओं से भी है।

चरण 2: जादू चढ़ने का प्रभाव स्पष्ट कीजिए जादू चढ़ने पर मनुष्य को प्रत्येक वस्तु अपने लिए उपयोगी और जरूरी लगती है। वह दूसरों के पास दिखाई देने वाली चीजें अपने पास भी चाहता है तथा अपने जीवन में अभाव अनुभव करने लगता है। खरीदने का लोभ उसके विवेक पर हावी हो जाता है और वह अनावश्यक सामान खरीद लाता है। उसकी संतुष्टि बढ़ने के बजाय नई-नई इच्छाएँ बढ़ती हैं। इस दशा में वह बाज़ार का उपयोग अपनी जरूरत पूरी करने के लिए करने के स्थान पर उसके आकर्षण के अधीन हो जाता है।

चरण 3: जादू उतरने का परिणाम बताइए आकर्षण का आवेग समाप्त होने पर मनुष्य को पता चलता है कि जिन वस्तुओं को वह सुख-सुविधा का साधन समझकर लाया था, वे उसके लिए अनावश्यक हैं। वे आराम देने के बजाय बाधा और बोझ बनने लगती हैं। खर्च किए हुए धन और अपनी अविवेकपूर्ण खरीदारी पर उसे खीझ तथा पछतावा होता है। इस अनुभव से स्पष्ट होता है कि वास्तविक आवश्यकता की पहचान के बिना खरीदारी संतोष नहीं देती।

चरण 4: निष्कर्ष बाज़ार का जादू वस्तुओं का लुभावना आकर्षण है। इसके चढ़ने पर लोभ और अनावश्यक खरीदारी बढ़ते हैं; उतरने पर उन्हीं वस्तुओं की निरर्थकता समझ में आती है और मनुष्य को खीझ तथा पश्चात्ताप होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को तीन स्पष्ट बिंदुओं में रखिए: आकर्षण का अर्थ, उसके प्रभाव में खरीदारी और प्रभाव उतरने पर पछतावा। आवश्यकता तथा इच्छा का अंतर बताना न भूलिए।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की किन्हीं तीन विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में विशेषता के साथ कथा का उदाहरण देना आवश्यक है।
- यशोधर बाबू का व्यक्तित्व पुराने संस्कारों, सामाजिक दायित्व और पारिवारिक संवेदनशीलता से बनता है।

चरण 1: परंपराप्रिय और आदर्शों के प्रति निष्ठावान यशोधर बाबू अपने जीवन में किशनदा के संस्कारों और उनकी सीख को महत्त्व देते हैं। किसी नई परिस्थिति में वे सोचते हैं कि किशनदा होते तो क्या करते। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आधुनिक ढंग से पार्टी और केक की व्यवस्था उन्हें सहज नहीं लगती। इससे उनके पुराने जीवन-मूल्यों और सादगी के प्रति लगाव का पता चलता है।

चरण 2: सामाजिक और कर्तव्यनिष्ठ वे संबंधों को केवल तत्काल लाभ की दृष्टि से नहीं देखते। रिश्तेदारों, परिचितों और अपने पहाड़ी समाज के लोगों से संपर्क बनाए रखना अपना दायित्व मानते हैं। परिवार के नए सदस्य इन सामाजिक व्यवहारों को उतना महत्त्व नहीं देते, फिर भी यशोधर बाबू पुराने परिचय और रिश्तों का निर्वाह करना चाहते हैं। यह उनकी सामाजिक जिम्मेदारी की भावना है।

चरण 3: भावुक और आत्मीयता के आकांक्षी बच्चों की आधुनिक जीवनशैली से असहज होने पर भी वे उनसे स्नेह की अपेक्षा रखते हैं। भूषण के दिए ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग में उन्हें दुख होता है कि बेटे ने दूध लेने जाते समय उसे पहनने की बात कही, स्वयं दूध लाने की जिम्मेदारी लेने की नहीं। उन्हें उपहार के साथ पुत्र की आत्मीय देखभाल चाहिए। यह प्रसंग उनकी कोमल संवेदनशीलता उजागर करता है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू परंपरानिष्ठ, सामाजिक कर्तव्यों के प्रति सजग और भावुक व्यक्ति हैं। किशनदा से उनका लगाव, रिश्तों का निर्वाह और ड्रेसिंग गाउन वाला प्रसंग इन विशेषताओं के प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: तीन विशेषताएँ अलग-अलग लिखें और प्रत्येक के साथ किशनदा, सामाजिक संबंध अथवा ड्रेसिंग गाउन का उपयुक्त प्रसंग जोड़ें।

12(ख). उस खास बात का विस्तार से उल्लेख कीजिए जो अजायबघर में रखे सिंधु सभ्यता के पुरातत्त्व के अवशेषों से सिद्ध होती है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक वस्तुओं से किसी सभ्यता की जीवन-दृष्टि और प्राथमिकताओं का अनुमान लगाया जाता है।
- पाठ में सिंधु सभ्यता की पहचान ताकत के प्रदर्शन के बजाय कला, सुरुचि और नागरिक जीवन से जुड़ती है।

चरण 1: अवशेषों की प्रकृति पहचानना अजायबघर में रखी वस्तुओं में मिट्टी के बर्तन, खिलौने, मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ विशेष ध्यान खींचती हैं। ये वस्तुएँ वहाँ के लोगों के कौशल, सौंदर्यबोध और व्यवस्थित जीवन का परिचय देती हैं। सामान्य जीवन की छोटी-छोटी जरूरतों में भी कलात्मकता दिखाई देती है।

चरण 2: हथियारों के अभाव का संकेत समझना इन अवशेषों में हथियारों का वैसा संग्रह नहीं मिलता जो किसी युद्धप्रिय सभ्यता की पहचान बने। राजाओं की शक्ति, सैनिक विजय या विशाल सत्ता-प्रदर्शन की अपेक्षा नागरिक जीवन से जुड़ी वस्तुएँ अधिक मुखर हैं। लेखक इसी आधार पर उस सभ्यता में प्रभुत्व और बाहुबल के प्रदर्शन के बजाय सामाजिक जीवन और सृजनशीलता को महत्त्व देता है।

चरण 3: पाठ की खास स्थापना स्पष्ट करना इन वस्तुओं से सिद्ध होने वाली खास बात यह है कि सिंधु सभ्यता का सौंदर्यबोध किसी एक शासक या धर्मसत्ता की देन मात्र नहीं था। वह समाज के जीवन में व्याप्त था। उसके निर्माता कला और उपयोगिता को साथ लेकर चलते थे। इसलिए लेखक उसे बाहुबल से अधिक कलाबोध और सुरुचि से अनुशासित सभ्यता के रूप में देखता है।

चरण 4: निष्कर्ष अजायबघर के अवशेष सिंधु सभ्यता के कलाप्रिय, सुरुचिसंपन्न और नागरिक जीवन पर केंद्रित स्वरूप को सामने लाते हैं। वहाँ शक्ति-प्रदर्शन की तुलना में सृजन, उपयोगिता और सौंदर्य का महत्त्व अधिक दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले कलात्मक दैनिक वस्तुओं और हथियारों के अभाव का उल्लेख करें, फिर इन्हें कलाबोध तथा सुरुचि की स्थापना से जोड़ें।

12(ग). कहानीकार के शिक्षित होने के संघर्ष में दत्ता जी एवं देसाई के योगदान को 'जूझ' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की शिक्षा का संघर्ष गरीबी, खेती के काम और पिता के विरोध से जुड़ा है।
- दत्ता जी राव देसाई का हस्तक्षेप लेखक के लिए विद्यालय लौटने का अवसर बनता है।

चरण 1: संघर्ष की परिस्थिति लेखक के पिता उससे खेती का काम करवाना चाहते थे और उसकी पढ़ाई रोक चुके थे। लेखक पढ़ना चाहता था, पर पिता से अपनी बात मनवाना उसके लिए कठिन था। उसकी माँ उसकी इच्छा समझती थी। माँ और पुत्र ने दत्ता जी राव देसाई की सहायता ली, क्योंकि पिता उनकी बात का सम्मान करते थे।

चरण 2: देसाई का निर्णायक हस्तक्षेप दत्ता जी राव देसाई ने लेखक के पिता को बुलाकर बच्चे की पढ़ाई छुड़ाने पर नाराजगी प्रकट की। उन्होंने पिता के उन बहानों को स्वीकार नहीं किया जिनसे विद्यालय न भेजने को उचित ठहराया जा रहा था। उन्होंने स्पष्ट किया कि बच्चे को शिक्षा मिलनी चाहिए और उसे फिर विद्यालय भेजने के लिए पिता पर प्रभावी दबाव डाला। उनके सामाजिक प्रभाव से पिता अपना विरोध बनाए नहीं रख सके।

चरण 3: शिक्षा का अवसर और उसका परिणाम इस हस्तक्षेप के फलस्वरूप पिता ने लेखक को पढ़ने की अनुमति दी, यद्यपि खेत के काम करने की शर्तें भी रखीं। लेखक को विद्यालय जाने से पहले और लौटने के बाद खेती में हाथ बँटाना पड़ता था। इसलिए देसाई ने संघर्ष पूरी तरह समाप्त नहीं किया, लेकिन उन्होंने वह बंद रास्ता खोल दिया जिसके बिना लेखक की पढ़ाई आगे नहीं बढ़ सकती थी। लेखक ने अपनी मेहनत से इस अवसर को सार्थक किया।

चरण 4: निष्कर्ष दत्ता जी राव देसाई ने पिता को समझाकर और उन पर दबाव डालकर लेखक की रुकी पढ़ाई पुनः शुरू करवाई। उनका सहयोग लेखक की शिक्षा-यात्रा का निर्णायक सहारा बना।

त्वरित सुझाव: देसाई के योगदान को इस क्रम में लिखें: पिता का विरोध, देसाई का हस्तक्षेप और खेती की शर्तों के साथ विद्यालय लौटने का अवसर।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए: 'सिल्वर वेडिंग' के आधार पर यशोधर बाबू के सामने आई किन्हीं दो 'समहाऊ इंप्रॉपर' स्थितियों का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू को बदलते पारिवारिक व्यवहार कई बार अपने संस्कारों के अनुसार अनुचित लगते हैं।
- कथा में 'समहाऊ इंप्रॉपर' उनकी इसी असहजता और पीढ़ियों के अंतर को व्यक्त करता है।

चरण 1: भूषण की नौकरी और अधिक वेतन बेटे भूषण को कम उम्र में निजी संस्था में अच्छी नौकरी और अपने से अधिक वेतन मिलना यशोधर बाबू को सहज नहीं लगता। वे सरकारी नौकरी की स्थिरता और अपने पुराने अनुभवों के आधार पर सोचते हैं। पुत्र की इतनी तेजी से बढ़ती आय और उसके नए कामकाजी संसार को वे पूरी तरह समझ नहीं पाते; यह स्थिति उन्हें कुछ अनुचित-सी लगती है।

चरण 2: विवाह की वर्षगाँठ का आधुनिक आयोजन बच्चों ने विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर पार्टी और केक का प्रबंध किया है। यशोधर बाबू इस प्रकार के उत्सव के अभ्यस्त नहीं हैं। उन्हें अपनी घरेलू घटना का ऐसा प्रदर्शन और आधुनिक ढंग से उसका मनाया जाना असहज करता है। परिवार जिस आयोजन में उत्साह अनुभव करता है, उसी को वे अपने पुराने संस्कारों के कारण 'समहाऊ इंप्रॉपर' मानते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भूषण की नई नौकरी और ऊँचा वेतन तथा सिल्वर वैडिंग का आधुनिक पार्टी-आयोजन ऐसी दो स्थितियाँ हैं जिनमें यशोधर बाबू का पुराना जीवनबोध नई पीढ़ी से मेल नहीं खाता।

त्वरित सुझाव: दो ठोस स्थितियाँ लिखकर प्रत्येक में बताइए कि यशोधर बाबू के पुराने संस्कारों को कौन-सी नई बात असहज करती है।

13(ख). 'ऐन की डायरी उसकी निजी भावनात्मक उथल-पुथल का दस्तावेज भी है।' इस कथन की विवेचना कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी बाहरी घटनाओं के साथ लेखक के निजी अनुभवों और भावनाओं का भी अभिलेख होती है।
- ऐन की किशोरावस्था, अकेलापन और आत्मीय संबंधों की चाह उसकी भावनात्मक हलचल के केंद्र हैं।

चरण 1: अकेलेपन और समझे जाने की इच्छा ऐन छिपकर रहने की कठिन परिस्थितियों में अपने भीतर गहरा अकेलापन अनुभव करती है। परिवार और साथ रहने वाले लोगों के बीच भी उसे लगता है कि उसकी भावनाओं को पूरी तरह नहीं समझा जाता। वह अपनी डायरी को आत्मीय मित्र मानकर उसमें वे बातें कहती है जिन्हें सबके सामने कहना कठिन है। माँ से मतभेद और बड़ों के व्यवहार पर उसकी प्रतिक्रियाएँ उसके अंतर्द्वंद्व को प्रकट करती हैं।

चरण 2: किशोर मन के बदलते भाव डायरी में पीटर के प्रति उसका आकर्षण, स्नेह और आत्मीयता की आकांक्षा भी व्यक्त होती है। वह अपने बदलते मन और संबंधों को समझने का प्रयास करती है। भय तथा निराशा के बीच भविष्य की आशा, पढ़ने-लिखने की इच्छा और स्वतंत्र जीवन के सपने बने रहते हैं। इन अलग-अलग भावों की टकराहट उसके किशोर मन की उथल-पुथल का सजीव परिचय देती है।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन की डायरी युद्ध और यहूदियों की यातना के इतिहास के साथ उसके अकेलेपन, पारिवारिक तनाव, प्रेम, भय और आशाओं का निजी भावनात्मक दस्तावेज भी है।

त्वरित सुझाव: कथन की पुष्टि के लिए अकेलापन, माँ से मतभेद और पीटर से आत्मीयता जैसे निजी अनुभवों को बाहरी युद्ध-स्थिति से जोड़ें।

13(ग). क्या सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कह सकते हैं? कारण सहित उत्तर दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के अवशेषों के आधार पर सिंधु सभ्यता की नगर-योजना और नागरिक जीवन की विशेषताएँ सामने आती हैं।
- जल संस्कृति का अर्थ जीवन और नगर-व्यवस्था में जल की उपलब्धता, स्वच्छता और सुव्यवस्थित निकासी को विशेष महत्त्व देना है।

चरण 1: जल-सुविधाओं के प्रमाण देखिए मोहनजोदड़ो में बड़ी संख्या में कुएँ, घरों में स्नानघर और विशाल सार्वजनिक स्नानागार मिले हैं। इससे पता चलता है कि लोगों के लिए जल जुटाने तथा नियमित स्नान की अच्छी व्यवस्था थी। विशाल स्नानागार का निर्माण जल के सामुदायिक उपयोग को भी महत्त्वपूर्ण स्थान देता है।

चरण 2: जल-निकासी और स्वच्छता का संबंध स्पष्ट कीजिए घरों का गंदा पानी नालियों से बाहर निकलता था। नगर की ढकी हुई नालियाँ सुविचारित जल-निकासी व्यवस्था का प्रमाण हैं। इस प्रकार वहाँ केवल पानी जमा करने पर नहीं, उसके उपयोग के बाद नगर को स्वच्छ रखने पर भी ध्यान दिया गया था।

चरण 3: निष्कर्ष हाँ, सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कह सकते हैं, क्योंकि कुओं, स्नानघरों, विशाल स्नानागार और सुव्यवस्थित नालियों से उसके जीवन में जल तथा स्वच्छता का विशेष महत्त्व सिद्ध होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जल की उपलब्धता के लिए कुओं और उपयोग-निकासी के लिए स्नानागार तथा नालियों का उदाहरण जोड़िए।

14. श्री सौंदलगेकर के व्यक्तित्व की उन विशेषताओं पर प्रकाश डालिए जिनके कारण 'जूझ' के लेखक के मन में कविता के प्रति लगाव उत्पन्न हुआ। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ 'जूझ' में शिक्षा और रचनात्मकता के विकास में संवेदनशील शिक्षक की भूमिका दिखाई देती है।
- सौंदलगेकर की काव्यरसिकता, प्रभावपूर्ण शिक्षण और प्रोत्साहन ने लेखक को कविता का आनंद लेने से आगे बढ़ाकर स्वयं कविता रचने की प्रेरणा दी।

चरण 1: काव्यरसिक और अध्ययनशील व्यक्तित्व पहचानिए सौंदलगेकर मराठी पढ़ाते थे। उन्हें मराठी और अंग्रेज़ी की अनेक कविताएँ याद थीं तथा कई कवियों के जीवन और स्वभाव की जानकारी थी। वे स्वयं भी कविताएँ लिखते थे। इस साहित्यिक रुचि के कारण उनका पढ़ाना केवल पाठ का अर्थ समझाना नहीं था; वे विद्यार्थियों को कविता के भाव-संसार में ले जाते थे। लेखक को कविता एक जीवंत और आनंद देने वाली रचना लगने लगी।

चरण 2: संगीत और अभिनय से शिक्षण का प्रभाव समझाइए वे कविता को सुरीले ढंग से, लय और भाव के साथ सुनाते थे। कविता के अनुरूप हाव-भाव और अभिनय करते हुए वे विद्यार्थियों को उसमें निहित अनुभव महसूस कराते थे। लेखक उनकी पढ़ाई कविताओं को खेतों में काम करते हुए भी गुनगुनाता और उनके ढंग का अनुकरण करता था। इस तरह कक्षा का अनुभव उसके दैनिक जीवन तक फैल गया और कविता से उसका आत्मीय संबंध बन गया।

चरण 3: कवि बनने की प्रेरणा स्पष्ट कीजिए कवियों के प्रसंग सुनकर और अपने शिक्षक को कविता लिखते देखकर लेखक को लगा कि कवि भी उसके जैसे सामान्य मनुष्य होते हैं। अपने आसपास के जीवन और अनुभवों पर वह भी कविता बना सकता है। शिक्षक के व्यक्तित्व ने कविता को दूर की, अगम्य वस्तु समझने का संकोच मिटाया और उसके भीतर रचना करने का आत्मविश्वास जगाया।

चरण 4: प्रोत्साहन और मार्गदर्शन का परिणाम बताइए सौंदलगेकर लेखक की कविताएँ ध्यान से सुनते, उसकी कोशिशों को प्रोत्साहित करते और शब्दों तथा लय के संबंध में मार्गदर्शन देते थे। उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार से लेखक अपनी रचना उन्हें दिखाने में संकोच नहीं करता था। वह नई कविताएँ बनाने और उन्हें बेहतर करने का अभ्यास करने लगा। इस प्रकार शिक्षक की प्रशंसा के साथ मिलने वाला सुधार-सुझाव उसकी रचनात्मक क्षमता के विकास में सहायक हुआ।

चरण 5: निष्कर्ष सौंदलगेकर की साहित्यिक समझ, सुरीला काव्य-पाठ, भावपूर्ण अभिनय और आत्मीय प्रोत्साहन ने लेखक के मन में कविता के प्रति स्थायी लगाव जगाया। उन्होंने लेखक को केवल कविता का रस लेना ही नहीं सिखाया, बल्कि स्वयं कविता रचने का साहस भी दिया।

त्वरित सुझाव: हर व्यक्तित्व-विशेषता को लेखक पर पड़े प्रभाव से जोड़िए: सुरीला पाठ से रसास्वादन और प्रोत्साहन से रचना का आत्मविश्वास।

अथवा

14. 'सिल्वर वेडिंग' में एक ओर स्थिति को ज्यों-का-त्यों स्वीकार लेने का भाव है तो दूसरी ओर अनिर्णय की स्थिति भी। कहानी के इस द्वंद्व को स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' बदलते पारिवारिक संबंधों और दो पीढ़ियों के जीवन-मूल्यों का द्वंद्व प्रस्तुत करती है।
- यशोधर बाबू का संकट परंपरागत संस्कारों से जुड़ाव और आधुनिक परिवार की वास्तविकता के बीच अपनी स्थिति तय न कर पाना है।

चरण 1: पुरानी जीवन-दृष्टि के प्रति आग्रह स्पष्ट कीजिए यशोधर बाबू सादगी, अनुशासन, आत्मीय संबंधों और सामाजिक दायित्वों को महत्त्व देते हैं। किशन दा उनके आदर्श हैं; उनके साथ बिताए जीवन से बनी कसौटी पर वे वर्तमान को परखते हैं। इसलिए बच्चों की आधुनिक जीवनशैली और दिखावे की संस्कृति उन्हें सहज स्वीकार नहीं होती। परिवार के अनेक व्यवहारों को वे 'समहाउ इम्प्रॉपर' मानते

हैं, पर इस असंगति का स्पष्ट समाधान नहीं कर पाते।

चरण 2: स्थिति स्वीकार करने की व्यावहारिक प्रवृत्ति देखिए उनकी पत्नी और बच्चे बदलते समय की सुविधाएँ तथा तौर-तरीके अपना लेते हैं। पत्नी बच्चों के साथ आधुनिक परिवेश में ढल जाती हैं। यशोधर बाबू को यह परिवर्तन खटकता है, फिर भी वे परिवार से संबंध तोड़कर अलग नहीं होते और उसकी दिशा पूरी तरह बदल भी नहीं पाते। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आधुनिक ढंग का आयोजन उनकी पसंद के अनुरूप न होने पर भी परिवार की वास्तविकता बनकर उनके सामने आता है। यहाँ बाहरी परिस्थिति को सह लेने और उसे भीतर से उचित मान लेने में अंतर है।

चरण 3: अनिर्णय और भावनात्मक अपेक्षा समझाइए वे न नई पीढ़ी के मूल्यों को पूरी तरह अपना पाते हैं, न पुराने जीवन को वर्तमान में ज्यों का त्यों लौटा सकते हैं। पुत्र का ड्रेसिंग गाउन जैसा उपहार सुविधा और आधुनिकता का संकेत है, किंतु उन्हें वस्तु से अधिक संतान का अपनापन चाहिए। दूध लाने जैसे दैनिक काम में बेटे की आत्मीय भागीदारी की अपेक्षा उनके भावनात्मक अकेलेपन को उजागर करती है। भौतिक सुविधा उनके मन में पारिवारिक निकटता की कमी की भरपाई नहीं करती।

चरण 4: द्वंद्व का व्यापक अर्थ बताइए किशन दा की स्मृति भी उन्हें निर्विवाद समाधान नहीं देती। पुराने आदर्शों के साथ जुड़ा अकेलापन और वर्तमान परिवार में अनुभव किया गया अलगाव, दोनों उनके सामने हैं। इसलिए कहानी किसी एक पीढ़ी को पूरी तरह सही घोषित करके समाप्त नहीं होती। बदलते समय को स्वीकार करने की आवश्यकता तथा आत्मीय मूल्यों को बचाए रखने की इच्छा एक साथ बनी रहती हैं। इसी कारण स्वीकृति के साथ संकोच, असहमति और अनिर्णय दिखाई देते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कहानी का द्वंद्व यह है कि यशोधर बाबू व्यवहार में बदलती पारिवारिक स्थिति को सह लेते हैं, पर मन से उसे पूरी तरह स्वीकार नहीं कर पाते। पुराने आदर्शों का मोह और नई जीवनशैली की वास्तविकता उन्हें अनिर्णय में रखते हैं; इस संघर्ष के केंद्र में आत्मीय संबंधों की उनकी चाह है।

त्वरित सुझाव: द्वंद्व समझाते समय पुरानी कसौटी, आधुनिक पारिवारिक व्यवहार और आत्मीयता की अपेक्षा को एक-एक प्रसंग से जोड़िए।